Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَمَنْ كَانَ
فِيْ هٰذِهٖۤ اَعْمٰى
فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى
وَاَضَلُّ سَبِيْلًا

(बनी ईसराईल : 73)

अनुवाद: और जो इस दुनिया में अंधा हो वह अखिरत में भी अंधा होगा और राहे के एतबार से सबसे अधिक भटका हुआ होगा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-36

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

20 सफ़र 1445 हिज्री कमरी, 07 तबूक 1402 हिज्री शम्सी, 07 सितंबर 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

हे अमुक अमुक के बेटे ! हे अमुक अमुक के बेटे ! क्या अब तुमको इस बात से ख़ुशी होगी कि तुमने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़रमांबर्दारी की होती

क्योंकि हमने तो सच्च सच्च पा लिया जो हमारे रब ने हम से वादा किया था, क्या तुमने भी वाक़ई वह पा लिया है जो तुम्हारे रब ने तुम से वादा किया था

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है तुम उन (मक़्तूलीन बदर) से ज़्यादा नहीं सुन रहे उन बातों को जो मैं कह रहा हूँ

हक़ीक़त यही है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़िद्या लेने का फ़ैसला जो फ़रमाया था वह इलाही मंशा के मुताबिक़ था

जंग-ए-बदर के हवाले से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी का वर्णन

क़ुरैश के सरदारों की तदफ़ीन, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार, अम्वाल-ए-ग़नीमत की तक़सीम का वर्णन तथा क़ैदियों को फ़िद्या लेकर आज़ाद करने के बारे में एक प्रसिद्ध रिवायत का हल

माननीय राना अब्दुल हमीद ख़ान साहब काठगढ़ी मुरब्बी सिलसिला और नाएब नाज़िम माल वक़्फ़-ए-जदीद पाकिस्तान
और श्रीमती नुसरत जहां अहमद साहिबा पत्नी माननीय मुबश्शिर अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला की वफ़ात पर उनका वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 जुलाई 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-बदर के हवाले से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत और वाक़ियात के बारे में वर्णन हो रहा था। जंग-ए-बदर ख़त्म हुई और कुफ़्फ़ार को अल्लाह तआला ने उनके बद-अंजाम तक पहुंचाया। जैसा कि वर्णन हो चुका है। सत्तर कुफ़्फ़ार मारे गए जिनमें से बहुत से धनी और सरदार भी थे। इन क़ुरैश के सरदारों की तदफ़ीन के बारे में इस तरह वर्णन मिलता है। सही बुख़ारी में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम काबे के पास नमाज़ पढ़ रहे थे। यह पुराना वाक़िया है, पिछले सारे हालात वर्णन किए जा रहे हैं कि पहले क्या हालात होते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम काबे के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि क़ुरैश के चंद अफ़राद के कहने पर उनमें से सबसे बद-बख़्त ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कंधों के दरमयान जानवर की बच्चादानी रख दी जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सज्दे में थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सज्दे की हालत में ही रहे और वे लोग हंसते रहे। हज़रत फ़ातिमा अलैहिस्सलाम को किसी ने बताया। वह छोटी लड़की थीं, दौड़ती हुई आईं और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सज्दा की हालत में रहे यहां तक कि उन्होंने इस को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके ऊपर से हटा दिया अर्थात वो भारी बच्चादानी जो थी उस को हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहुन अन्हा ने हटाया। हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहुन अन्हा ने उन लोगों को बुरा-भला कहा। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ चुके तो आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की। अल्लाह! तू क़ुरैश की गिरिफ़त कर। हे अल्लाह! तू क़ुरैश की गिरिफ़त कर। हे अल्लाह! तू क़ुरैश की गिरिफ़त कर। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नाम लिए हे अल्लाह अम्र बिन हशशाम और उत्बा बिन रबिया और शीबा बिन रबिया और वलीद बिन उत्बा और अमय बिन ख़लफ़, उक़बा बिन अबी मोईत और अम्मार बिन वलीद पर गिरिफ़त कर। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि अल्लाह की

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

क़सम मैंने ख़ुद उनको बदर के दिन गिरे हुए देखा अर्थात उन लोगों को जिनके नाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लिए थे। फिर उनको बदर के गढ़े में घसीट कर फेंकागया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि गढ़े वाले लानत के नीचे हैं

(सही अल् बुख़ारी, किताब अस्सलात, बाब المرأة تطرح عن المصلى شيئا من الاذى، रिवायत नंबर : 520)

इसी तरह सीरत की कुतुब में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मुशरेकीन की लाशों को उनके क़तल होने की जगह से उठा लिया जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग शुरू होने से पहले ही उनकी क़त्ल-गाहों की ख़बर दे दी थी। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें बदर में क़तल होने वाले मुशरेकीन की क़त्ल-गाहें दिखा दी थीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमईह क़त्ल-गाहें दिखाते हुए फ़रमाते जाते थे कि कल इन शा अल्लाह यह उत्बा बिन रबीया की क़तलगाह होगी। यह शीबा बिन रबीया की क़तलगाह होगी। यह अमय बिन ख़लफ़ की क़तलगाह होगी। यह अबुजहल बिन हशशाम की क़तलगाह होगी और यह अमुक की क़तलगाह होगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपना दस्त-ए-मुबारक ज़मीन पर रख कर येह निशानदेही फ़रमाते जाते थे और फिर अगले दिन ग़ज़व-ए-बदर में जो लोग मरे उनकी लाशें उस जगह से ज़रा भी इधर उधर नहीं थीं जहां-जहां आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना दस्त-ए-मुबारक रखा था।

(उद्धृत अल् सीरतुल हल्बिया, भाग 2, पृष्ठ 245 दारुल कुतुब बेरूत 2002 ई.)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जंग के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि कुफ़्फ़ार के सब मक़्तूलों को गढ़े में डाल दो। इसलिए सबको डाल दिया गया सिवाए अमय बिन ख़लफ़ के। उसकी लाश अपनी ज़िरह में फूल गई थी। जब उस को उठाना चाहा तो इस का गोश्त गिरने लगा इस वजह से उस को उसी जगह मिट्टी और पत्थर डाल कर ढांक दिया गया।

(उद्धृत सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 435 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि मुशरेकीन की लाशों को गढ़े में फेंक दिया जाए तो उत्बा बिन रबीया को पकड़ा गया और गढ़े में फेंक दिया गया। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू हनीवा रज़ियल्लाहु अन्हो जो उत्बा के बेटे थे के चेहरे पर नागवारी के आसार देख लिए। ये मुस्लमान हो गए थे, बाप काफ़िर था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हे अबू हुज़ैफ़ा शायद तुम्हारे दिल में तुम्हारे बाप के बारे में कुछ गुमान गुज़रा है। उन्होंने अर्ज़ की नहीं हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे न तो बाप के बारे में शक है न इसके क़तल के बारे में शक है लेकिन मैं जानता था कि मेरा बाप साब्बुल् अरा और हलीम और मुअज़्ज़िज़ इन्सान था। मुझे उम्मीद थी कि ये उमूर अर्थात ये बातें जो उसने देखें, अच्छी बातें थीं, उसे इस्लाम की तरफ़ ले जाएँगी। जब मैंने उस का अंजाम देखा तो मुझे इसका कुफ़्र याद आ गया हालाँकि मुझे उसके इस्लाम लाने की उम्मीद थी। इस बात ने मुझे ग़म-ज़दा कर दिया। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अर्थात अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को दुआ-ए-ख़ैर दी और भलाई के कलिमात कहे।

(सिबलुल् हुदा वलरिशाद, भाग 4 पृष्ठ 56-57 दारुल कुतुब इल्मिया,1993 ई.)

हज़रत अबू तल्हा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग-ए-बदर के दिन सरदारान-ए-क़ुरैश में से चौबीस आदमियों की निसबत हुक्म दिया और उन्हें बदर के कुओं में से एक कुँवें में डाल दिया गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी क़ौम पर ग़ालिब आते तो मैदान में तीन रातें क़ियाम फ़रमाते जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर में ठहरे और तीसरा दिन हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ऊंटनी पर कुजावा बाँधने का हुक्म फ़रमाया। इसलिए उस पर कुजावा बाँधा गया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चले और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ चले और कहने लगे हम समझते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी ग़रज़ के लिए ही चले हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस कुँवें की मुंडेर पर पहुंच कर खड़े हो गए जहां उन काफ़िरों को दफ़नाने के लिए फेंका गया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके और उन मरे हुओं के बापों के नाम लेकर पुकारने लगे कि हे अमुक अमुक के बेटे! हे अमुक अमुक के बेटे क्या अब तुम को इस बात से ख़ुशी होगी कि तुम ने अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबर्दारी की होती क्योंकि हमने तो सच्च सच्च पा लिया जो हमारे रब ने हम से वादा किया था। क्या तुमने भी वाक़ई वह पा लिया है जो तुम्हारे रब ने तुमसे वादा किया था?

अबु तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन लाशों से क्या बातें कर रहे हैं जिनमें जान नहीं है? मरे हुए लोग हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है तुम उनसे ज़्यादा उन बातों को नहीं सुन रहे जो मैं कह रहा हूँ।

(बुख़ारी, किताबुल् मग़ाज़ी, बाब क़तल अबू जहल, हदीस : 3976)

सीरत इब्ने हशशाम में यूं वर्णन है कि हे कुँवें वालो अपने नबी के तुम बहुत बुरे रिश्तेदार थे। तुम ने मेरी तक़ज़ीब की और लोगों ने मेरी तसदीक़ की। तुमने मुझे अपने घर से निकाला और लोगों ने मुझे पनाह दी। तुमने मेरे साथ जंग की और लोगों ने मेरी मदद की। फिर फ़रमाया هَلْ وَجَدْتُّمْ مَا وَعَدَ كُمْ رَبُّكُمْ حَقًّا؟ जो तुम्हारे रब ने तुम से वाअदा किया था क्या उसे तुमने सच्चा पाया।

(सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 435 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इस वाक़िया को हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तरह लिखा है कि "वापसी से क़बल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस गढ़े के पास तशरीफ़ ले गए जिसमें क़ुरैश के सरदारों दफ़न किए गए थे और फिर उनमें से एक एक का नाम लेकर पुकारा और फ़रमाया هَلْ وَجَدْتُّمْ مَا وَعَدَ كُمُ اللهُ حَقًّا فَإِنِّيْ وَجَدْتُّ مَا وَعَدَنِيَ اللهُ حَقًّا अर्थात "क्या तुमने उस वादे को हक़ पाया जो ख़ुदा ने मेरे ज़रीया तुमसे किया था। तहक़ीक़ मैंने इस वादे को हक़ पा लिया है जो ख़ुदा ने मुझ से किया था। फ़रमाया : يَا أَهْلَ الْقَلِيْبِ بِئْسَ عَشِيْرَةِ النَّبِيِّ كُنْتُمْ لِنَبِيِّكُمْ كَذَّبْتُمُوْنِيْ وَصَدَّقَنِيَ النَّاسُ وَأَخْرَجْتُمُوْنِيْ وَآوَانِيَ النَّاسُ وَقَاتَلْتُمُوْنِيْ وَنَصَرَنِيَ النَّاسُ अर्थात "हे गढ़े में पड़े हुए लोगो तुम अपने नबी के बहुत बुरे रिश्तेदार बने। तुमने मुझे झुठलाया और दूसरे लोगों ने मेरी तसदीक़ की। तुमने मुझे मेरे वतन से निकाला और दूसरों ने मुझे पनाह दी। तुमने मेरे ख़िलाफ़ जंग की और दूसरों ने मेरी मदद की।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह अब मुर्दा हैं वह क्या सुनेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने फ़रमाया "मेरी यह बात वह तुमसे भी बेहतर सुन रहे हैं।"

अर्थात वह इस आलम में पहुंच चुके हैं जहां सारी हक़ीक़त आश्कारा हो जाती है और कोई पर्दा नहीं रहता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ये कलिमात जो ऊपर दर्ज किए गए हैं।" जो अभी वर्णन हुए हैं "अपने अंदर एक अजीब दर्द और पीढ़ा की आमेज़िश रखते हैं और उन से इस कलबी कैफ़ीयत का कुछ थोड़ा सा अंदाज़ा हो सकता है जो उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तारी थी। ऐसा मालूम होता है कि इस वक़्त क़ुरैश की मुख़ालेफ़त की पिछले तारीख़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखों के सामने थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आलम-ए-तख़य्युल में इस का एक एक वर्क़ उल्टाते जाते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकादल इन औराक़ के मुताला से बेचैन था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ये शब्द इस बात का भी यक़ीनी सबूत हैं कि इस सिलसिला जंग के आग़ाज़ की ज़िम्मेदारी पूर्णतः कुफ़्फ़ार मक्का पर थी। जैसा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शब्द قَاتَلْتُمُوْنِيْ وَنَصَرَنِيَ النَّاسُ है। अर्थात "हे मेरी क़ौम के लोगो तुमने मुझ से जंग की और दूसरों ने मेरी मदद की। और कम से कम उन अलफ़ाज़ से यह तो ज़रूर साबित होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी जगह यही यक़ीन रखते थे कि इन जंगों में इब्तिदा-ए-कुफ़्फ़ार की तरफ़ से हुई है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मजबूर हो कर महिज़ ख़ुद हिफ़ाज़ती में तलवार उठाई है।" (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम-ए, सफ़ा364-365)

इस जंग में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कारों का वर्णन भी है। उनमें से एक वाक़िया सीरत की किताब में यूं मिलता है। इब्न-ए-इसहाक़ कहते हैं कि उकाशा बिन मेहसन बदर के दिन अपनी तलवार के साथ लड़ाई करते रहे यहां तक कि वह उनके हाथ में टूट गई। वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक लक्कड़ी उनको इनायत की और फ़रमाया उकाशा! तुम इस से काफ़िरों के साथ जंग करो। उकाशा ने उसको हाथ में लेकर लहराया तो वह लक्कड़ी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ में तलवार बन गई जो काफ़ी लंबी थी जिसका लोहा बहुत सख़्त था और उसकी रंगत सफ़ैद थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस के साथ जंग करते रहे यहां तक कि मुस्लमानों को अल्लाह तआला ने फ़तह अता फ़र्मा दी। रावी कहता है इस तलवार का नाम ऊन था। बाद की जंगों में भी वह इस तलवार के साथ दाद-ए-शुजाअत देते रहे यहां तक कि मुसैलमा कज़्ज़ाब के साथ जंग में उन्होंने शहादत पाई। (सीरत

शेष पृष्ठ 08 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला हम में विशेषता पर बदर की एहमियत का इदराक पैदा फ़रमाए और हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ अलैहिस्सलाम की आमद को समझें वाले हों

अल्लाह तआला करे कि मुस्लमान उम्मत भी इस वाक़िया बदर की हक़ीक़त को समझे
और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आए हुए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पहचाने ताकि ये मुस्लमान दुबारा अपनी खोई हुई अज़मत हासिल करने के योग्य बन सकें

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों को ताकीद की कि क़ैदियों के साथ नरमी और शफ़क़त का सुलूक करें और उनके आराम का ख़्याल रखें

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस उम्मत में आने वाले मह्दी की एक निशानी यह भी बताई हुई है
उसके पास भी एक किताब होगी जिसमें अस्हाब-ए-बदर रज़ियल्लाहु अन्हो की संख्या के मुताबिक़ तीन सौ तेराह अस्हाब के नाम होंगे

समस्त कारकुनान जो जलसा की मुख़्तलिफ़ डयूटियों पर निर्धारित किए गए हैं वे कोशिश करें कि हर शामिल-ए-जलसा की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान समझ कर ख़िदमत करें

डियूटी देने वाले को हमेशा अच्छे अख़लाक़ का मुज़ाहरा करते रहना चाहिए और मुस्कुराते रहना चाहिए

अगर किसी में कोई ग़लत बात देखें जो हमारे माहौल के तक़द्दुस और तालीम के ख़िलाफ़ है तो नरमी और प्यार से समझाएँ

विशेषता पर हर अहमदी को इस जलसा की कामयाबी के लिए दुआएं करते रहना चाहिए

जंग-ए-बदर के हवाले से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी का वर्णन, जंग-ए-बदर की एहमियत और उसके परिणाम तथा बदरी सहाबा की फ़ज़ीलत का वर्णन

जल्सा सालाना यू.के के हवाले से मेहमान-नवाज़ी की एहमियत का वर्णन और कारकुनान और मेहमानों को कीमती उपदेश

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 जुलाई 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-बदर के हवाले से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत का वर्णन हो रहा है इस बारे में कुछ और बातें पेश करता हूँ। जंग-ए-बदर ख़त्म होने के बाद क़ैदियों से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुस्न-ए-सुलूक के बारे में तबक़ात-ए-इबन-ए-साद में दर्ज है कि जब बदर के क़ैदी आए तो उनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस रात जागते रहे। आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से किसी ने पूछा कि हे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किस बात ने जगाए रखा है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अब्बास के कराहने की आवाज़ ने। तो एक व्यक्ति गया और उसने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो के बंधन ढीले कर दिए। बाँधे हुए थे। रस्सियाँ कुछ ढीली कर दीं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या बात है मैं अब्बास के कराहने की आवाज़ नहीं सुन रहा? तो एक व्यक्ति ने कहा कि मैंने उनके बंधन कुछ ढीले कर दिए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो फिर तमाम क़ैदियों के साथ ऐसा ही करो। (अल्तबकातुल कुबरा लाबनान भाग 4 पृष्ठ 9 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2012 ई. यह नहीं कि मेरा रिश्तेदार समझ कर एक के कर दिए।

बदर के क़ैदियों के मुताल्लिक़ सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो तफ़सीलात वर्णन की हैं इस में लिखा है कि "तीन दिन तक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर की वादी में क़ियाम फ़रमाया और यह वक़्त अपने शुहदा की तकफ़ीन वत-दफ़ीन और अपने ज़ख़मियों की मरहम पट्टी में गुज़रा और इन्ही दिनों में ग़नीमत के अम्वाल को जमा करके मुरत्तिब किया गया और कुफ़्फ़ार के क़ैदियों को जिनकी संख्या सत्तर थी महफ़ूज़ करके मुख़्तलिफ़ मुस्लमानों की सुपुर्दगी में दे दिया गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों को ताकीद की कि क़ैदियों के साथ नरमी और शफ़क़त का सुलूक करें और उनके आराम का खयाल रखें।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जिनको अपने आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हर ख़ाहिश के पूरा करने का इशक़ था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस नसीहत पर इस ख़ूबी के साथ अमल किया कि दुनिया की तारीख़ में इस की नज़ीर नहीं मिलती। इसलिए ख़ुद उन क़ैदियों में से एक क़ैदी अबू अज़ीज़ बिन अम्र की ज़बानी रिवायत आती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म की वजह से अंसार मुझे तो पक्की हुई रोटी देते थे लेकिन ख़ुद खजूर इत्यादि खा कर गुज़ारा कर लेते थे और कई दफ़ा ऐसा होता था कि उनके पास अगर रोटी का छोटा टुकड़ा भी होता था तो वह मुझे दे देते थे और ख़ुद नहीं खाते थे और अगर मैं कभी शर्म की वजह से वापिस कर देता तो वह इसरार के साथ फिर मुझी को दे देते थे। जिन क़ैदियों के पास लिबास काफ़ी नहीं था उन्हें कपड़े मुहय्या कर दिए गए थे। इसलिए अब्बास को अब्दुल्लाह बिन अबी ने अपनी क़मीस दी थी। सर विलियम

मियूर ने क़ैदियों के साथ इस मुशफ़िक़ाना सुलूक का निम्नलिखित शब्दों में एतराफ़ है।" लिखता है कि "मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत के अधीन अंसा और मुहाजेरीन ने कुफ़्फ़ार के क़ैदियों के साथ बड़ी मुहब्बत और मेहरबानी का सुलूक किया। इसलिए कुछ क़ैदियों की अपनी शहादत तारीख़ में इन अलफ़ाज़ में वर्णित है कि ख़ुदा भला करे मदीना वालों का वह हमको सवार किया करते थे और आ पपैदल चलते थे। हमको गंदुम की पक्की हुई रोटी देते थे और आप केवल खजूरें खा कर पड़े रहते थे। इसलिए (मियूर साहिब लिखते हैं) हम को यह मालूम करके ताज्जुब नहीं करना चाहिए कि कुछ क़ैदी इस नेक सुलूक के असर के नीचे मुस्लमान हो गए।"क़ैदीयों से जब यह सुलूक होता था तो उनमें से कुछ मुस्लमान हो गए"और ऐसे लोगों को फ़ौरन आज़ाद कर दिया गया .. जो क़ैदी इस्लाम नहीं लाए उन पर भी इस नेक सुलूक का बहुत अच्छा असर था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

(हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए, पृष्ठ : 365)

जंग-ए-बदर की एहमियत और इस के असरात के बारे में लिखा है कि जब फ़तह बदर की ख़ुशख़बरी लेकर अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हो और ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना पहुंचे तो उनके मुँह से फ़तह की ख़ुशख़बरी का ऐलान सुनकर अल्लाह का दुश्मन काब बिन अशर्फ़ यहूदी उनको झूठलाने लगा। वह कहने लगा कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन बड़े बड़े रईसों को मार डाला है तो ज़मीन की पुश्त पर रहने से ज़मीन के अंदर रहना बेहतर है। अर्थात ज़िंदा रहने से मौत बेहतर है।

(सीरतुल हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 250 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.

अल्लामा शिबली नुमानी अपनी किताब में ग़ज़व-ए-बदर के नतायज वर्णन करते हुए लिखते हैं कि "बदर के मार्का ने मज़हबी और मुल्की हालात पर गौना गों असरात पैदा किए और हक़ीक़त में यह इस्लाम की तरक़्क़ी का कदम-ए-अव्वलीन था। क़ुरैश के तमाम बड़े बड़े सरदार जिनमें से एक एक इस्लाम की तरक़्क़ी की राह में कई सौ थे फ़ना हो गए। उत्बा और अबुजहल की मौत ने क़ुरैश की रियासत आम्मा का ताज अबूसुफ़ियान के सिर पर रखा जिससे दौलत अमवी का आग़ाज़ हुआ लेकिन क़ुरैश की असली ज़ोर-ओ-ताक़त का मयार घट गया। मदीना में अब तक अब्दु-ल्लाह बिन अबी बिन सलूल ऐलानिया काफ़िर था लेकिन अब बज़ाहिर वह इस्लाम के दायरा में गया।" फ़तह बदर के बाद उसने भी ज़ाहिर में इस्लाम स्वीकार कर लिया" जबकि समस्त आयु मुनाफ़िक़ रहा और इसी हालत में जान दी। क़बायल अरब जो सिलसिला वाक़ियात का रुख देखते थे अगरचे राम नहीं हुए लेकिन सहम गए।" बहुत से क़बायल मुस्लमान तो नहीं हुए लेकिन फ़तह को देखकर सहम ज़रूर गए। मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उन्होंने कार्यवाहियां करनी बंद कर दीं या ख़ौफ़ज़दा हो गए।" इन मुवाफ़िक़ हालात के साथ मुख़ालिफ़ अस्बाब में भी इन्क़िलाब शुरू हो गया। यहूद से मुआहिदा हो चुका था कि वह हर मुआमला में यकसू रहेंगे लेकिन इस फ़तह नुमायां ने उनमें हसद की आग भड़का दी और वह इस को ज़बत न कर सके क़ुरैश को पहले सिर्फ हज़रमी का रोना था बदर के बाद हर घर मातम था और बदर में क़तल होने वालों के इंतेक़ाम के लिए मक्का का बच्चा बच्चा मुज़्तर था। इसलिए सोवेक की घटना और उहुद का मार्का इसी जोश का मज़हर था।"

(सीरतुन्नबी(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अज़ शिब्ली नुमानी, भाग प्रथम, पृष्ठ 210-211प्रकाशन आर ज़ैड पैकेजज़ लाहौर 1408 हिजरी)

फ़तह बदर के नतायज वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने यूं लिखा है कि "अभी तक मदीना में क़बायल ओस और ख़ज़रज के बहुत से लोग शिर्क पर क़ायम थे। बदर की फ़तह ने उन लोगों में एक हरकत पैदा कर दी और उन में से बहुत से लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस अज़ीमुश्शान और ख़ारिक़ आदत फ़तह को देखकर इस्लाम की हक़्क़ानियत के क़ायल हो गए। और इस के बाद मदीना से बुतपरस्त अंसर बड़ी सुरअत के साथ कम होना शुरू हो गया परंतु कुछ ऐसे भी थे जिनके दिलों में इस्लाम की इस फ़तह ने बुग़ज़ और हसद आफ़त की चिंगारी रोशन कर दी और उन्होंने बरमला मुख़ालेफ़त को ख़िलाफ़-ए--मस्लहत समझते हुए बज़ाहिर तो इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन अंदर ही अंदर से के एस्तीसाल के दर पे हो हो कर मुनाफ़क़ीन के गिरोह में शामिल हो गए। इन पहले वर्णित लोगों में ज़्यादा मुमताज़ अब्दुल्लाह बिन ऊबय बिन सलूल था जो क़बीला ख़ज़रज का एक निहायत नामवर रईस था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम के मदीना में तशरीफ़ लाने के नतीजा में अपनी सरदारी के छीने जाने का सदमा उठा चुका था। यह व्यक्ति बदर के बाद बज़ाहिर मुस्लमान हो गया, लेकिन उस का दिल इस्लाम के ख़िलाफ़ बुग़ज़ और दुश्मनी से परिपूर्ण था और अहले निफ़ाक़ का सरदार बन कर उसने मख़फ़ी मख़फ़ी इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ रेशा दिवानी का सिलसिला शुरू कर दिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ : 376)

मज़ीद फ़रमाते हैं कि "जंग-ए-बदर का असर कुफ़्फ़ार और मुस्लमानों हर दो के लिए निहायत गहरा और देर-पा हुआ और इसी लिए तारीख-ए-इस्लाम में इस जंग को एक ख़ास एहमियत हासिल है यहाँ तक कि क़ुरआन शरीफ़ में इस जंग का नाम यौमुल फ़ुर्कान रखा गया है। अर्थात वह दिन जबकि इस्लाम और कुफ़्र में एक खुला खुला फ़ैसला हो गया। बेशक जंग-ए-बदर के बाद भी क़ुरैश और मुस्लमानों की बाहम लड़ाईयां हुईं और ख़ूब सख़्त सख़्त लड़ाईयां हुईं और मुस्लमानों पर कुछ नाज़ुक नाज़ुक मौक़े भी आए लेकिन जंग-ए-बदर में कुफ़्फ़ार-ए-मक्का की रीढ़ की हड्डी टूट चुकी थी जिसे बाद का कोई जर्राही अमल मुस्तक़िल तौर पर दरुस्त नहीं कर सका। संख्या मक़्तूलीन के लिहाज़ से बे-शक यह कोई बड़ी शिकस्त नहीं थी।क़ुरैश जैसी क़ौम में से सत्तर बहत्तर सिपाहियों का मारा जाना हरगिज़ क़ौमी तबाही नहीं कहला सकता। जंग-ए-अहद में यही संख्या मुस्लमान मक़्तूलीन की थी लेकिन यह नुक़्सान मुस्लमानों के फ़ातिहाना रस्ता में एक आरिज़ी रोक भी साबित नहीं हुआ।' हालाँकि मुस्लमान तो उस वक़्त बहुत कमज़ोर थे।"फिर वो क्या बात थी कि जंग-ए--बदर योमुल् फुरकान कहलाई? इस सवाल के जवाब में बेहतरीन अलफ़ाज़ वह हैं जो क़ुरआन शरीफ़ ने बयान फ़रमाए और वह ये हैं। يَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِيْنَ। वाक़ई उस दिन कुफ़्फ़ार की जड़ कट गई अर्थात जंग-ए-बदर की ज़रब कुफ़्फ़ार की जड़ पर लगी और वह दो टुकड़े हो गई। अगर यही ज़रब बजाय जड़ के शाख़ों पर लगती तो ख़वाह उस से कितना गुना ज़्यादा नुक़्सान करती वह नुक़्सान इस नुक़्सान के मुक़ाबला में हैच होता लेकिन जड़ की ज़रब ने हरे-भरे दरख़्त को देखते देखते ईंधन का ढेर कर दिया और सिर्फ वही शाख़ें बचीं जो ख़ुशक होने से पहले दूसरे दरख़्त से पैवंद हो गईं। अतः बदर के मैदान में क़ुरैश के नुक़्सान का पैमाना यह नहीं था कि कितने आदमी मरे बल्कि यह था कि कौन कौन मरे और जब हम इस नुक़्ता निगाह से क़ुरैश के मक़्तूलीन पर नज़र डालते हैं तो इस बात में ज़रा भी संदेह का स्थान नहीं रहता कि बदर में फ़ील वकत क़ुरैश की जड़ कट गई। उत्बा और शेबा और अमय बिन खिलफ और अबुजहल और उक़बा बिन अबी मुती और नज़र बिन हारिस इत्यादि क़ुरैश की क़ौमी ज़िंदगी के रूह-ए-रवाँ थे और रूह बदर की वादी में क़ुरैश से हमेशा के लिए परवाज़ कर गई और वह एक क़ालिब बे-जान की तरह रह गए। यह वह तबाही थी जिसकी वजह से जंग-ए-बदर यौम-ए-फ़ुर्क़ान के नाम से मौसूम हुई।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ए.ए, पृष्ठ 371-372)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस बारे में लिखा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि "यही वह जंग है जिसका नाम क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने फुर्क़ान रखा है और यही वह जंग है जिसमें अरब के वे सरदार जो इस दावा के साथ घर से चले थे कि इस्लाम का नाम हमेशा के लिए मिटा देंगे ख़ुद मिट गए और ऐसे मिटे कि आज उनका नाम-लेवा कोई बाक़ी नहीं और अगर कोई है तो अपने आपको उनकी तरफ़ मंसूब करना बजाय गर्व की और ख़्याल करता है। ग़रज़ कि इस जंग में अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को अज़ीमुश्शान कामयाबी अता की थी।" (सीरतुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अनवारूल -उलूम, भाग 1 पृष्ठ 610)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "इस में कोई संदेह नहीं कि मुस्लमानों पर इसके बाद भी मज़ालिम होते रहे और उन्हें कुफ़्फ़ार से कई लड़ाईयां लड़नी पड़ीं परंतु इस में भी कोई शुबा नहीं कि जंग-ए-बदर ने कुफ़्फ़ार की ताक़त को बिल्कुल तोड़ दिया था और मुस्लमानों की शौकत उन पर ज़ाहिर हो गई थी।

जंग-ए-बदर जिसे क़ुरआन-ए-करीम ने फुर्क़ान क़रार दिया है इसके मुता-ल्लिक़ बाइबल में भी भविष्यवाणी पाई जाती है इसलिए यसीया बाब 21आयत 13 से 17 में लिखा है "अरब की बाबत इल्हामी कलाम। अरब के सहरा में तुम रात को काटोगे। हे दिवानियों के काफ़लो पानी ले के प्यासे का इस्तिक़बाल करने आओ। हे तीमा की सरज़मीन के बाशिंदो! रोटी ले के भागने वाले के

मिलने को निकलो क्योंकि वह तलवारों के सामने से नंगी तलवार से और खींची हुई कमान से और जंग की शिद्दत से भागे हैं क्योंकि ख़ुदावंद ने मुझ को यूं फ़रमाया। अभी एक बरस, हाँ मज़दूर के से एक ठीक बरस में केदार की सारी हशमत जाती रहेगी और तीर अंदाज़ों के जो बाक़ी रहे केदार के बहादुर लोग घट जाऐंगे कि ख़ुदावंद इसराईल के ख़ुदा ने यूं फ़रमाया।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि "यसया नबी के इस कलाम में यह भविष्यवाणी की गई थी कि हिज्रत के ज़माना पर ठीक एक वर्ष गुज़रने के बाद अरब में एक ऐसी जंग होगी जिसमें केदार की सारी हशमत ख़ाक में मिल जाएगी और वह जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भाग जाने का इल्ज़ाम लगाते थे अपने लाओ लश्कर की मौजूदगी में पीठ दिखाएँगे और वह भी ऐसी हालत में कि कमांडर और उनके जरनैलों की लाशें मैदान-ए-जंग में पड़ी रह जाएँगी और आख़िर वादी मक्का अपने जरनैलों को खो कर अपनी इस शौकत को बिल्कुल खो बैठेगी जो इस से पहले उसे हासिल थी। ईसी तरह क़ुरआन करीम ने एक ग्यारवें रात की ख़बर देकर यह भविष्यवाणी की थी कि हिज्रत के पूरे एक साल के बाद कुफ़्फ़ार की सारी ताक़त टूट जाएगी और मुस्लमानों के लिए फ़तह और कामरानी की सुबह ज़ाहिर हो जाएगी। इसलिए ऐन एक साल के बाद जंग-ए-बदर हुई जिसमें कुफ़्फ़ार के बड़े बड़े लीडर मारे गए और मुस्लमानों को उन पर नुमायां ग़लबा हुआ। " फ़रमाते हैं कि" देख लो मदीना में आने के बाद पहले रमज़ान तक इस भविष्यवाणी पर दस साल पूरे हुए थे और रमज़ान से ग्यारहवीं वर्ष का आग़ाज़ हुआ था। इस एक वर्ष के गुज़रने पर वर्ष 17 रमज़ान को बदर की जंग हुई जिसमें बड़े बड़े कुफ़्फ़ार मारे गए और उनके ज़ालिमाना हमलों का ख़ातमा हो गया। गोया वह ग्यारहवीं रात जो मुस्लमानों पर आई हुई थी ठीक एक साल गुज़रने के बाद दूर हो गई। और मुस्लमानों ने फ़तह-ओ-कामरानी की सुबह को अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और उस की ताईद और नुसरत के साथ देख लिया।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 8 पृष्ठ 515)

फ़ज़ीलत-ए-सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो जो बदर के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थे उनके बारे में लिखा है कि हज़रत जिबराल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा आप मुस्लमानों में अहल-ए-बदर को क्या मुक़ाम देते हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बेहतरीन मुस्लमान या ऐसा ही कोई कलमा फ़रमाया। जिबराईल ने कहा और इसी तरह वह मलायका भी अफ़ज़ल हैं जो जंग-ए-बदर में शरीक हुए।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल् मग़ाज़ी, बाब शहूद अल् मलायका बदर, हदीस : 3992)

यह वाक़िया जो अब मैं बयान करने लगा हूँ जबकि यह पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के हालात में वर्णन हो चुका है लेकिन यहां भी इस की एहमीयत के पेश-ए-नज़र वर्णन करता हूँ।

उबैदुल्लाह बिन अबी राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो ने बताया, उन्होंने कहा कि मैंने यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से सुना। कहते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे, ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और मिक़दाद बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हो को भेजा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने फ़रमाया तुम चले जाओ जब तुम रोज़-ए-ख़ाख़ पर पहुँचो तो वहां एक शुत्र सवार औरत होगी और उस के पास एक ख़त है तुम वह ख़त उस से ले लो। हम चल पड़े हमारे घोड़े सरपट दौड़ते हुए हमें ले गए। जब हम रौज़ा ख़ाख़ में पहुंचे तो हम क्या देखते हैं कि वहां एक शुत्र सवार औरत मौजूद है हमने कहा ख़त निकालो। वह कहने लगी कि मेरे पास कोई ख़त नहीं। हमने कहा तुम्हें ख़त निकालना होगा अन्यथा हम तुम्हारे कपड़े उतार देंगे और तलाशी लेंगे इस पर उसने वह ख़त अपने जूड़े से, बालों से निकाला और हम वह ख़त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आए। देखा तो इस में यह लिखा था कि हातिब बिन अबी बलता की तरफ़ से अहल मक्का के मुशरिकों के नाम। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी इरादे की उनको सूचना दे रहा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे बुला भेजा और पूछा हातिब यह क्या है? उसने कहा हे रसूलुल्लाह! मेरे मुताल्लिक़ जल्दी न फ़रमाएं। मैं एक ऐसा आदमी था जो क़ुरैश में आकर मिल गया था उनमें से न था और दूसरे मुहाजेरीन जो आपके साथ थे उनकी मक्का में रिश्ते दारियां थीं जिनके माध्यम से वह अपने घर-बार और माल-ओ-अस्बाब को बचाते रहे। मैंने चाहा कि इन मक्के वालों पर कोई एहसान कर दूं क्योंकि उनमें कोई रिश्तेदारी तो मेरी थी ही नहीं शायद वह इस एहसान ही की वजह से मेरा पास करें और मैंने किसी कुफ़्र या इर्तिदाद की वजह से यह नहीं किया और इस्लाम क़बूल करने के बाद कुफ़्र कभी पसंद नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा यह किस तरह हो सकता है कि अगर सच्चे दिल से इस्लाम क़बूल कर लिया जाए तो उसके बाद कुफ़्र को पसंद करे। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसने तुमसे सच्च कहा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे इजाज़त दें कि मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह तो जंग-ए-बदर में मौजूद था और तुम्हें क्या मालूम कि अल्लाह ने अहल-ए-बदर को देखा और फ़रमाया जो तुम चाहो करो मैंने तुम्हारे गुनाहों की पर्दापोशी कर दी है।

(सही अल्बुख़ारी, किताबुल् الجهادوالسير،باب الجاسوس., हदीस 3007)

अर्थात अब बड़े गुनाह सरज़द नहीं होंगे और उनका अंजाम बख़ैर होगा। ये लोग कुफ़्र की हालत में नहीं मरेंगे। यह मतलब है इस का। इसलिए ख़ुद हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्हो के शब्दों से ज़ाहिर है जैसा कि मैंने पहले वर्णन किया कि इस्लाम क़बूल करने के बाद कुफ़्र को कभी पसंद नहीं किया जा सकता।

फिर हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया शायद कि अल्लाह तआला ने अहल--ए-बदर पर नज़र फ़रमाई है और कहा कि जो चाहे अमल करो मैंने तुम्हें बख़्श दिया।

(सुंन अबी दाऊद, किताब अल् सुन्नत, बाब फ़ी अल् ख़लीफ़ा, हदीस : 4654)

अर्थात सिवाए कुफ़्र की हालत के आम गलतियां और गुनाह अल्लाह तआला तो बख़्श देगा। दूसरे शब्दों में यहां यह ज़मानत भी अल्लाह तआला ने दे दी कि उन पर कभी कुफ़्र की हालत नहीं आएगी और उनका अंजाम बख़ैर होगा। एक यह मतलब भी है उसका। अगर कुछ गलतियां और गुनाह होंगे तो बशरी तक़ाज़ों के तहत होंगे और अल्लाह तआला उन्हें माफ़ फ़र्मा देगा

उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। मैं उम्मीद रखता हूँ कि बदर में और हुदैबिया में शरीक होने वालों में से कोई भी इन शा अल्लाह आग में दाख़िल नहीं होगा। मैंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या अल्लाह ने नहीं फ़रमाया وَاِنۡ مِّنۡكُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا‌ ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتۡمًا مَّقۡضِيًّا (मर्यम : 72)और तुम ज़ालिमों में से कोई नहीं परंतु वह ज़रूर इस में उतरने वाला है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तु ने अल्लाह तआला के इस क़ौल को नहीं सुना। ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيۡنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيۡنَ فِيۡهَا جِثِيًّا (मर्यम : 73) फिर हम उनको बचा लेंगे जिन्हों ने तक़्वा इख़्तेयार किया और हम ज़ालिमों को इस में घुटनों के बल गिरे हुए छोड़ देंगे।

(सुंन इब्ने माजा, किताबुल् जिहाद, बाब वर्णन अल् बास, हदीस : 4281)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में भी जब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के वज़ीफ़े निर्धारित हुए तो बदरी सहाबियों रज़ियल्लाहु अन्हो का वज़ीफ़ा मुमताज़ तौर पर ख़ास निर्धारित किया गया। ख़ुद बदरी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो भी जंग-ए-बदर की शिरकत पर ख़ास फ़ख़र करते थे। इसलिए मियूर साहिब लिखते हैं कि "बदरी सहाबी इस्लामी सोसाइटी के आला तरीन रुकन समझे जाते थे। साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हा जब इसी साल की उम्र में फ़ौत होने लगे तो उन्हों ने कहा कि मुझे वह चोग़ा ला कर दो जो मैंने बदर के दिन पहना था और जिसे मैंने आज के दिन के लिए सँभाल कर रखा हुआ है। यह वही साद थे जो बदर के ज़माना में बिल्कुल नौजवान थे और जिनके हाथ पर बाद में ईरान फ़तह हुआ और जो कूफ़ा के बानी और इराक़ के गवर्नर बने परंतु उनकी नज़र में ये तमाम इज़्ज़तें और फ़ख़र जंग-ए-बदर में शिरकत के इज़्ज़त और फ़ख़र के मुक़ाबले में बिल्कुल तुच्छ थीं और जंग-ए-बदर वाले दिन के लिबास को वह अपने वास्ते सब ख़िलअतों से बढ़कर ख़िलअत समझते थे और उनकी आख़िरी ख़ाहिश यही थी कि इसी लिबास में लपेट कर उनको क़ब्र में उतारा जाए"।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)
अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो
एम.ए, पृष्ठ : 373)

बदरी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एहमियत और फ़ज़ीलत का अंदाज़ा

इस से भी हो सकता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस उम्मत में आने वाले मह्दी की एक निशानी यह क़रार दी कि उसके पास भी एक किताब होगी जिसमें अस्हाब-ए-बदर रज़ियल्लाहु अन्हो की संख्या के मुताबिक़ तीन सौ तेराह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम होंगे।

इसलिए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "चूँकि हदीस सही में आ चुका है कि मह्दी मौऊद के पास एक छिपी हुई किताब होगी जिसमें उसके तीन सौ तेराह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम दर्ज होगा। इसलिए यह वर्णन करना ज़रूरी है कि वह भविष्यवाणी आज पूरी हो गई। यह तो ज़ाहिर है कि पहले इस से उम्मत-ए-मरहूमा में कोई ऐसा व्यक्ति पैदा नहीं हुआ कि जो महदूयित का मुद्दई होता और उसके वक़्त में छापाख़ाना भी होता। और उसके पास एक किताब भी होती जिसमें तीन सौ तेराह नाम लिखे हुए होते और ज़ाहिर है कि अगर यह काम इन्सान के इख़तेयार में होता तो इस से पहले कई झूठे अपने तईं उसका मिस्दाक़ बना सकते। परंतु असल बात यह है कि ख़ुदा की छुपी हुई चीज़ों में ऐसी फ़ौक़ुलआदत शर्तें होती हैं कि कोई झूठा उनसे फ़ायदा नहीं उठा सकता और उस को वह सामान और अस्बाब अता नहीं किए जाते जो सच्चे को अता किए जाते हैं।" फ़रमाते हैं "शेख़ अली हमज़ा बिन अली मुल्क अल् तूसी अपनी किताब जवाहेरुल आस्रार में जो 840 हमें तालीफ़ हुई थी मह्दी मौऊद के बारे में निम्नलिखित इबारत लिखते हैं।" जिसका अनुमान यह है कि "अर्थात मह्दी उस गांव से निकलेगा जिसका नाम कदा है (यह नाम दरअसल क़ादियान के नाम को मोअररब किया हुआ है और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा उस मह्दी की तसदीक़ करेगा और दूर दूर से इस के दोस्त जमा करेगा जिनका शुमार अहल-ए-बदर के शुमार से बराबर होगा। अर्थात तीन सौ तेराह होंगे और उनके नाम बक़ैद मस्कन और ख़सलत छिपी हुई किताब में दर्ज होंगे। अब ज़ाहिर है कि किसी व्यक्ति को पहले इस से यह इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ कि वह मह्दी मौऊद होने का दावे करे और उस के पास छिपी हुई किताब हो जिसमें उस के दोस्तों के नाम हों लेकिन मैं पहले इस से भी आईना कमालात इस्लाम में तीन सौ तेराह नाम दर्ज कर चुका हूँ और अब दुबारा अतमाम-ए-हुज्जत के लिए तीन सौ तेराह नाम निम्न में दर्ज करता हूँ।" ज़मीमा रिसाला अंजाम-ए-आथम में आप फ़र्मा रहे हैं।" ताकि हर एक इंसाफ़ पसंद समझ ले कि यह भविष्यवाणी भी मेरे ही हक़ में पूरी हुई और बमूजब मंशा-ए-हदीस के यह वर्णन कर देना पहले से अधिक ज़रूरी है कि ये तमाम अस्हाब ख़सलत-ए-सिदक़-ओ-सफ़ा रखते हैं और हसब-ए-मुरातिब जिसको अल्लाह तआला बेहतर जानता है कुछ लोगों से मुहब्बत और इन्क़ता अल्लाह और सरगर्मी देन में सबक़त ले गए हैं अब देखो यह तीन सौ तेराह मुख़लिस जो इस किताब में दर्ज हैं यह उसी भविष्यवाणी का मिस्दाक़ है जो अहादीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में पाई जाती है। भविष्यवाणी में कदा का लफ़्ज़ भी है जो सरीह क़ादियान के नाम को बतला रहा है अतः समस्त मज़मून इस हदीस का यह है कि वह मह्दी मौऊद क़ादियान में पैदा होगा और उस के पास एक किताब छपी हुई होगी जिसमें तीन सौ तेराह उसके दोस्तों के नाम दर्ज होंगे। अतः हर एक व्यक्ति समझ सकता है कि ये बात मेरे इख़तेयार में तो नहीं थी कि मैं इन किताबों में जो इस ज़माना से हज़ार बरस पहले दुनिया में शाय हो चुकी हैं अपने गांव क़ादियान का नाम लिख देता। और न मैंने छापा की कल निकाली है "कोई पुर्ज़ा निकाला "ता ये ख़्याल किया जाए कि मैंने इस उद्देश्य से मतबा को इस ज़माना में ईजाद किया है।" अतः मैंने तो नहीं ईजाद किया था।"और न तीन सौ तेराह मुख़लिस अस्हाब का पैदा करना मेरे इख़तेयार में था बल्कि ये तमाम अस्बाब ख़ुद ख़ुदा तआला ने पैदा किए हैं ताकि वह अपने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी को पूरा करे।' (ज़मीमा रिसाला अंजाम-ए-आथम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 11 पृष्ठ 324 से 325, 329)

जंग-ए-बदर के हवाले से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत-ए-मूसा की मुमासेलत को वर्णन करते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल की मानिंद ख़ुदा तआला के रास्तबाज़ बंदे मक्का मुअज़्ज़मा में तेराह बरस तक कुफ़्फ़ार के हाथ से सख़्त तकलीफ़ में रहे और ये तकलीफ़ इस तकलीफ़ से बहुत ज़्यादा थी जो फ़िरऔन से बनीइसराईल को पहुंची। आख़िर ये रास्तबाज़ बंदे इस बरगज़ीद रास्तबाज़ों के साथ और उस की ईमा से मक्का से भाग निकले और इसी भागने की मानिंद जो बनी इसराईल मिस्र से भागे थे। फिर मक्का वालों ने क़तल करने के लिए तआक़ुब किया इसी तआक़ुब की मानिंद जो फ़िरऔन की तरफ़ से बनीइसराईल के क़तल के लिए किया गया था। आख़िर वह इसी तआक़ुब की शामत से बदर में इस तरह पर हलाक हुए जिस तरह फ़िरऔन और उसका लश्कर दरिया-ए-नील में हलाक हुआ था। उसी रम्ज़ के खोलने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबुजहल की लाश बदर के मर्दों में देख कर फ़रमाया था कि यह व्यक्ति इस उम्त का था।

उद्देश्य जिस तरह फ़िरऔन और उसका लश्कर दरिया-ए-नील में हलाक होना उमूर मश्हूदा महसूसा में से था "जिनको देखा भी जा सकता है महसूस किया जा सकता है "जिसके वक़ूअ में किसी को कलाम नहीं हो सकता इसी तरह अबुजहल और उसके लश्कर का तआक़ुब के वक़्त बदर की लड़ाई में हलाक होना उमूर मश्हूदा महसूसा में से था जिस से इन्कार करना हमाक़त और दीवानगी में दाख़िल है वह इसराईली अर्थात ख़ुदा के बंदीजन को हमारे सय्यद--ओ-मौला ने मक्का वालों के ज़ुलम से छुड़ाया उन्होंने बदर के वाक़िया के बाद इसी तरह गीत गाय जैसे के बनीइसराईल ने दरयाए मिस्र के सिर पर गाए थे और वह अरबी गीत अब तक किताबों में महफ़ूज़ चले आते हैं जो बदर के मैदान में गाय गए।" (अय्याम-ए-सालिस, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 14 पृष्ठ 290-291)

फिर एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "वह मसील जिसका तौरेत की किताब इस्तिस्ना में वर्णन है वह वही नबी मुईद-ए-इलाही है जो मा अपनी जमाअत के तेराह बरस बराबर दुख उठा कर और हर एक किस्म की तकलीफ़ देखकर आख़िर में अपनी जमाअत के भागा और उस का पीछा किया गया। आख़िर बदर की लड़ाई में चंद घंटों में फ़ैसला हो कर अबुजहल और उस का लश्कर तलवार की धार से ऐसे ही मारे गए जैसा कि दरिया-ए-नील की धार से फ़िरऔन और उसके लश्कर का काम तमाम किया गया। देखो कैसी सफ़ाई और कैसे मशहूद और महसूस तौर पर ये दोनों वाक़ियात मिस्र और मक्का और दरिया-ए-नील और बदर के आपस में मुमासिलत हैं।"

(अय्याम ए सुलहू, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 14 पृष्ठ : 292)

क़ुरआन शरीफ़ में लिखा है कि وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (आले ईमरान : 124) और बदर की जंग में जबकि तुम हक़ीर थे अल्लाह यक़ीनन तुम्हें मदद दे चुका है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक तसनीफ़ ख़ुत्बा इलहामिया में बदर और चौधवीं सदी की एक लतीफ़ मुशाबेहत का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं। जिसका उर्दू अनुवाद यह है कि "और वह चार-सौ का शुमार ख़ातिमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिज्रत से बाद है ताकि दीन के ग़लबा का वादा जो किताब-ए-मुबय्यन में पहले हो चुका था पूरा हो जाए अर्थात ख़ुदा का यह कथन कि لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (आले ईमरान : 124) अतः इंसानों की तरह इस आयत में निगाह कर क्योंकि यह आयत यक़ीनन दो बदर पर दलालत करती है। अव्वल वह बदर जो पहलों की नुसरत के लिए गुज़रा और दूसरा वह बदर जो पिछलों के लिए एक निशान है। अतः कोई शक नहीं कि यह आयत एक लतीफ़ इशारा इस आइन्दा ज़माना की तरफ़ करती है जो शुमार के दृष्टि से शब-ए-बदर की मानिंद हो और वे चार-सौ बरस हज़ार बरस के बाद है और यही इस्तिआरा के तौर पर ख़ुदा तआला के नज़दीक शब-ए-बदर है और उन सब के बावजूद हम को यह भी एतराफ़ है कि इस आयत के और अर्थ भी हैं जो पिछले ज़माना से ताल्लुक़ रखते हैं जैसा कि आलिमों को मालूम है क्योंकि इस आयत के दो रुख़ हैं और नुसरत दो नुसरतें और बदर दो बदर हैं। एक बदर पिछले ज़माना से ताल्लुक़ रखता है और दूसरा बदर आइन्दा ज़माना से इस वक़्त जबकि मुस्लमानों को ज़िल्लत पहुंचे जैसा कि इस ज़माना में देखते हो और इस्लाम पूर्ण चाँद की तरह शुरू हुआ और मुक़द्दर था कि अंजामकार आख़िर ज़माना बदर हो जाए ख़ुदा तआला के हुक्म से। अतः ख़ुदा तआला की हिक्मत ने चाहा कि इस्लाम इस सदी में बदर की तरह शक्ल इख़तेयार करे जो शुमार की दृष्टि से बदर की तरह मुशाबेह हो। अतः इन्ही माअनों की तरफ़ इशारा है ख़ुदा तआला के इस क़ौल में कि لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ अतः इस अमर में बारीक नज़र से ग़ौर कर और ग़ाफ़िलों से न हो और बे-शक لَقَدْ نَصَرَكُمْ का शब्द यहां दूसरी वजह के दृष्टि से نُصْرُكُمْ के अर्थों में आया है जैसा कि आरिफ़ों पर ज़ाहिर है। अल्-ग़र्ज़ ख़ुदा तआला ने इस्लाम के लिए दो ज़िल्लत के बाद दो इज़्ज़तें रखी थीं यहूद के बरख़िलाफ़ कि इन के लिए सज़ा के तौर पर दो इज़्ज़तों के बाद दो ज़िल्लतें निर्धारित की थीं जैसा कि बनी इसराईल की सूरत में इन फ़ासिक़ों और ज़ालिमों का क़िस्सा पढ़ते हो। अतः जिस वक़्त मुस्लमानों को पहली ज़िल्लत मक्का में पहुंची ख़ुदा ने उनसे अपने इस

क़ौल में वादा फ़रमाया था اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ (अल् हज : 40) और عَلٰى نَصْرِهِمْ के कथन से इशारा किया कि मोमिनों के हाथ से कुफ़्फ़ार पर अज़ाब उतरेगा। अतः ख़ुदा तआला का यह वादा बदर के दिन ज़ाहिर हुआ और काफ़िर मुस्लमानों की आबदार तलवार से क़तल किए गए।"

(ख़ुतबा इल् हामिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 16 पृष्ठ 273 से 277)

फिर आप अलैहिस्सलाम हैं "अब इस चौधवीं सदी में वही हालत हो रही है जो बदर के अवसर पर हो गई थी जिस के लिए अल्लाह तआला फ़रमाता है وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (आल-ए-इमरान : 124) इस आयत में भी दरअसल एक भविष्यवाणी मर्कूज़ थी अर्थात जब चौधवीं सदी में इस्लाम ज़ईफ़ और ना-तवान हो जाएगा उस वक़्त अल्लाह तआला इस वादा की हिफ़ाज़त के मुवाफ़िक़ उस की नुसरत करेगा।" (लैक्चर लुधियाना, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 280)

आप अलैहिस्सलाम हैं "अब देखो कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को बदर में नुसरत दी गई और फ़रमाया गया कि यह नुसरत ऐसे वक़्त में दी गई जबकि तुम थोड़े थे। इस बदर में कुफ़्र का ख़ातमा हो गया। बदर पर ऐसे अज़ीमुश्शान निशान के इज़हार में आइन्दा की भी एक ख़बर रखी गई थी। और यह कि बदर चौधवीं के चांद को भी कहते हैं। इस से चौधवीं सदी में अल्लाह तआला की नुसरत के इज़हार की तरफ़ भी ईमा है। और यह चौधवीं सदी वही सदी है जिस के लिए औरतें तक कहती थीं कि चौधवीं सदी ख़ैरो बरकत की आएगी। ख़ुदा की बातें पूरी हुईं और चौधवीं सदी में अल्लाह तआला के मंशा के मुवाफ़िक़ इस्मे अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बरुज़ हुआ और वह मैं हूँ।' आप अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं "इस्मे अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बरूज़ हुआ और वह मैं हूँ। जिसकी तरफ़ इस वाक़िया बदर में भविष्यवाणी थी जिस के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सलाम कहा। परंतु अफ़सोस कि जब वह दिन आया और चौधवीं का चांद निकला तो दुकानदार, ख़ुद-ग़रज़ कहा गया। अफ़सोस उन पर जिन्हों ने देखा और न देखा। वक़्त पाया और न पहचाना। वे मर गए जो मिंब्बरों पर चढ़ चढ़ कर रोया करते थे कि चौधवीं सदी में यह होगा और वे रह गए जो कि अब मिंब्बरों पर चढ़ कर कहते हैं कि जो आया है वह काज़िब है। उनको क्या हो गया। ये क्यों नहीं देखते और क्यों नहीं सोचते। इस वक़्त भी अल्लाह तआला ने बदर ही में मदद की थी और वह मदद اَذِلَّة की मदद थी जिस वक़्त तीन सौ तेराह आदमी सिर्फ मैदान में आए थे और कल दो तीन लकड़ी की तलवारें थीं और उन तीन सौ तेराह में ज़्यादा-तर छोटे बच्चे थे। इस से ज़्यादा कमज़ोरी की हालत क्या होगी और दूसरी तरफ़ एक बड़ी भारी जमईयत थी और वे सब के सब चुने हुए जंगी लड़ाकू और बड़े बड़े जवान थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ ज़ाहिरी सामान कुछ नहीं था। उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी जगह पर दुआ की اَللّٰهُمَّ اِنْ اَهْلَكْتَ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ لَنْ تُعْبَدَ فِي الْاَرْضِ اَبَدًا। अर्थात अल्लाह! अगर आज तू ने इस जमात को हलाक कर दिया तो फिर कोई तेरी इबादत करने वाला नहीं रहेगा। सुनो मैं भी यक़ीनन इसी तरह कहता हूँ कि आज वही बदर वाला मुआमला है। अल्लाह तआला इसी तरह एक जमाअत तैयार कर रहा है। वही बदर और اَذِلَّة का शब्द मौजूद है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 190-191 ऐडीशन 1984 ई.)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "चौदह के अदद को बड़ी मुनासबत है चौधवीं सदी का चांद मुकम्मल होता है। इसी की तरफ़ अल्लाह तआला ने وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (आले इमरान : 124) में इशारा किया है। अर्थात एक बदर तो वह था जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुख़ालिफ़ों पर फ़तह पाई उस वक़्त भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जमाअत क़लील थी और एक बदर यह है।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 4 पृष्ठ 12 ऐडीशन 1984 ई.) अर्थात आप ज़माना

जंग-ए-बदर का क़िस्सा मत भूलो के इल्हाम के बारे में हज़रत क़ाज़ी अब्दु-र्रहीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी 17 फरवरी 1904 ई. की डायरी में लिखते हैं कि "आज रात हज़रत ने ख़ाब बयान फ़रमाया किसी ने कहा कि जंग-ए-बदर का क़िस्सा मत भूलो।"

(वर्णन, पृष्ठ 668 ऐडीशन चहारुम 2004 ई.)

अल्लाह तआला हम में विशेषता पर बदर की एहमियत का इदराक पैदा फ़रमाए और हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ की आमद को समझने वाले हों। अल्लाह तआला करे कि मुस्लमान उम्मत भी इस वाक़िया बदर की हक़ीक़त को समझे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आए हुए मसीह मौऊद को पहचाने ताकि ये मुस्लमान दुबारा अपनी खोई हुई अज़मत हासिल करने के काबिल हो सकें।

अब मैं जलसा सालाना के बारे में भी कुछ कहना चाहता हूँ। इन शाअल्लाह तआला अगले जुमा से जमात अहमदिया यू.के का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। इस वर्ष इन शा अल्लाह तआला तक़रीबन तीन चार साल बाद जलसे में शमूलियत के लिए बाहर से भी बड़ी संख्या में मेहमान आएँगे बल्कि मेहमानों की आमद शुरू हो चुकी है। अल्लाह तआला इन सब सफ़र करने वालों के सफ़र में आसानियां पैदा फ़रमाए और हिफ़ाज़त से सब यहां पहुँचे और जलसा के मक़सद से हक़ीक़ी फ़ैज़ उठाने वाले हों। इसी तरह यू.के में रहने वाले अहमदी भी हक़ीक़ी जज़बे और रूह के साथ जलसे में शामिल हों और सिर्फ और सिर्फ यह बात मद्द-ए-नज़र हो कि हमने जलसे के दिनों में रुहानी मायदा हासिल करने की कोशिश करनी है। इसी तरह तमाम कारकुनान जो जलसा की मुख़्त-लिफ़ डयूटियों पर मुतय्यन किए गए हैं वह कोशिश करें कि हर शामिल जलसा की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान समझ कर करें।

इस मर्तबा यही तवक़्क़ो की जा रही है कि जसले में शामिल होने की संख्या में ज़्यादा इज़ाफ़ा होगा और इस वजह से हो सकता है कि इंतेज़ामी लिहाज़ से कुछ कमियां भी कुछ जगह रह जाएं। वैसे तो मुझे उम्मीद है कि माशा अल्लाह यू.के जमाअत की जलसा की इंतेज़ामिया अब इतनी तजरबाकार हो चुकी है कि अक्सर मसायल उन्होंने हल कर लिए होंगे और अगर कमियां होंगी तो बहुत मामूली बातें ही होंगी और अगर मसला पैदा भी होगा तो इस को अहसन रंग में ये लोग हल कर सकेंगे। अल्लाह तआला करे कि ऐसे मसायल उठें ही न जो मेहमानों के लिए किसी भी किस्म की तकलीफ़ का बायस बनें। इस्लाम तो मेहमानों की इज़्ज़त-ओ-इकराम की बहुत तलक़ीन करता है और फिर वह मेहमान जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बुलाने पर ख़ालिस दीनी ग़रज़ से आ रहे हों उनकी तो सब डयूटी वालों और सब मेज़बानों को विशेषता पर इज़्ज़त और ख़िदमत करनी चाहिए और ख़ालिस क़ुर्बानी के जज़बे से और अल्लाह तआला की रज़ा चाहते हुए यह ख़िदमत करनी चाहिए। मेहमानों की मेहमानदारी के बारे में इस्लाम की तालीम क्या है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमसे मेहमानों की ख़िदमत के बारे में क्या तवक़्क़ो रखते हैं इस बारे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि जो अल्लाह तआला और यौम-ए-आख़िरत पर ईमान लाता है वह अपने मेहमान का सम्मान करे।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल् बुख़ारी, किताब الادب،باب اکرام الضیف... हदीस 6135)

जलसे के दिनों में तो मुख़्तलिफ़ क़ौमों और मुख़्तलिफ़ तबाअ के लोग आते हैं और कई दफ़ा मुश्किल हो जाती है कि किस तरह उनकी तबीअतों के मुताबिक़ उनका ख़्याल रखा जाए। कई दफ़ा मेहमान अपने मिज़ाज की वजह से ऐसी बातें कर देता है या इस तरह इज़हार कर देता है जो डयूटी देने वाले के लिए या ख़िदमत करने वाले के लिए नागवार होता है लेकिन हमें अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही हुक्म है कि तुमने हर सूरत में मेहमान का सम्मान करना है क्योंकि इस से भी तुम्हारे ईमान का मयार परखा जाता है। अतः इस बात का बहुत ख़्याल रखें और डयूटी देने वाले को हमेशा अच्छे अख़लाक़ का मुज़ाहरा करते रहना चाहिए और मुस्कुराते रहना चाहीए।

ख़िदमत करने वालों ने ख़ुद अपनी मर्ज़ी से अपने आपको मेहमानों की ख़िदमत के लिए पेश किया है तो फिर उस मयार को भी हासिल करें जो अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम से चाहते हैं। अच्छे अख़लाक़ के इज़हार के लिए किन मयारों को हासिल करने की इस्लाम हमें तलक़ीन फ़रमाता है? इस बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं अपने भाई के सामने तेरा मुस्कुराना तेरे लिए सदक़ा है। तेरा अच्छी बात करने की तलक़ीन करना और बुरी बात से रोकना भी तेरे लिए सदक़ा है।

किसी भटके हुए को रास्ता दिखाना और नाबीना को रास्ता दिखाना भी तेरे लिए सदक़ा है और पत्थर, कांटा, हड्डी को रास्ते से हटाना भी तेरे लिए सदक़ा है अर्थात हर गंद को हटाना। और अपने डोल से अपने भाई के डोल में कुछ डाल देना भी तेरे लिए सदक़ा है।

(जामे अल् तिरमज़ी, ابواب البر والصلة،باب ما جاء فی صنائع المعروف हदीस :1956)

अतः यह हैं वे मयार जो हर अहमदी के होने चाहिऐं। क्योंकि मैं इस वक़्त कारकुनों को भी तवज्जा दिला रहा हूँ इसलिए उनसे विशेषता पर कहता हूँ कि हमेशा मुस्कुराते रहना एक बहुत बड़ा वस्फ़ है।

डयूटियों के दौरान कई दफ़ा सोने का कम वक़्त मिलता है, थकावट भी हो जाती है लेकिन हुक्म यह है कि ऐसे हालात में भी तुम मुस्कुराते रहो और दिल की ख़ुशी के साथ ख़िदमत करो।

फिर तर्बीयत के शोबे के लिए ख़ुसूसन और आम डयूटी वालों को उमूमन यह ख़्याल रखना चाहिए कि अगर किसी में कोई ग़लत बात देखें जो हमारे माहौल के तक़द्दुस और तालीम के ख़िलाफ़ है तो नरमी और प्यार से समझाएँ।

फिर आगे बात जो की रास्तों की सफ़ाई की है न रास्ते दिखाने की है। गो हमारे निज़ाम में रास्तों की राहनुमाई के लिए भी टीमें निर्धारित होती हैं। इसी तरह मुख़्तलिफ़ जगहों पर बोर्डज़ भी आवेज़ां किए जाते हैं जिन पर हिदायात भी लिखी होती हैं और जगहों के निशानात भी दिए होते हैं लेकिन फिर भी अगर किसी भी डयूटी वाले से कोई रास्ता पूछे तो उस की राहनुमाई करें। ज़रूरी नहीं है कि जिनकी डयूटी लगाई गई है वही बताएं। हर व्यक्ति अगर कोई रास्ता जानता हो तो दिखाना चाहिए। अच्छे अख़लाक़ का मुज़ाहरा यही है। अगर ख़ुद नहीं पता तो संबंधित विभाग तक पहुंचा दें। और माज़ूर और नाबीना की मदद करना तो वैसे ही ज़रूरी है यह तो हर एक जानता है और यहां इस तरफ़ तवज्जा भी दी जाती है इसलिए इस बारे में ज़्यादा कहने की ज़रूरत नहीं।

फिर रास्तों और मुख़्तलिफ़ जगहों पर अगर कोई मेहमान या कोई भी व्यक्ति कोई लिफ़ाफ़े या डिस्पोज़ेबल गिलास वग़ैरा या उस किस्म की चीज़ें या गंद वग़ैरा फेंक जाते हैं तो गो सफ़ाई का शोबा इस तरफ़ तवज्जा करता है और सफ़ाई करता रहता है लेकिन अगर कोई भी कारकुन ऐसा कोई गंद देखे तो ख़ुद ही उठा कर क़रीब के डस्टबि में डाल दे और इंतेज़ामिया को भी मुख़्तलिफ़ जगहों पर क़रीब क़रीब ही डस्टबि रखने चाहिऐं लेकिन साथ ही इंतेज़ामिया को यह निगरानी भी करनी चाहिए कि हालात ऐसे हैं कि कोई ग़लत चीज़ इस में न फेंक दे।

इसी तरह खाने खिलाने वाले जो लोग हैं उनको भी मेहमानों का बहुत ख़्याल रखना चाहिए। अगर कभी खाने में कमी हो जाए तो प्यार से मेहमानों को समझाएँ कि इस कमी की वजह से बांट कर खाना खाएं ताकि हर एक को कुछ न कुछ मिल जाए। उमूमन तो इस का इमकान कम होता है लेकिन कभी ऐसी सूरत पैदा हो जाए तो बड़े प्यार और हिक्मत से खाना खिलाने वालों को इस मुआमले को देखना चाहिए। इसी तरह ट्रैफ़िक का शोबा है यहां भी कई दफ़ा बदमज़गियाँ पैदा हो जाती हैं और विशेषता पर जब मौसम ख़राब हो तो यहां इस बारे में भी जहां में लोगों को आने वाले मेहमानों को भी कहूँगा कि इन ट्रैफ़िक वालों से तआवुन करें वहां इस शोबे के कारकुन भी हमेशा अच्छे अख़लाक़ का मुज़ाहरा करें।

और इसी तरह जलसे के दूसरे मुख़्तलिफ़ शोबा जात हैं। हर एक को आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस हिदायत पर अमल करते रहना चाहिए कि हमेशा मुस्कुराते रहो। अल्लाह तआला करे कि तमाम कारकुनान अहसन रंग में अपनी डयूटियाँ सरअंजाम देने वाले हों और जलसा हर लिहाज़ से बाबरकत हो विशेषता पर हर अहमदी को इस जलसा की कामयाबी के लिए दुआएं करते रहना चाहिए।

अल्लाह तआला हम सबको उस की तौफ़ीक़ भी दे।

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

हशशाम, पृष्ठ 434 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

फिर एक मोजज़े के रंग में मुखस्नाव और दस्त-ए-अक़्दस की तासीर का वर्णन भी मिलता है । हज़रत कतादह रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि ग़ज़्व-ए-बदर के रोज़ उनकी आँख पर ज़रब लगी उनकी आँख उनके रुख़्सार पर बह निकली अर्थात डेला निकाल के बाहर आ गया। उन्होंने उसे नीचे फेंक देने का इरादा किया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस सिलसिला में दरयाफ़्त किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं ऐसा नहीं करना और आप सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम ने हज़रत कतादह रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने पास बुलाया और अपनी हथेली पर उनकी आँख रखी फिर उसे उसकी जगह पर रख दिया अर्थात वापस आँख में डेला डाल दिया। वह कहते हैं कि उन्हें याद तक न रहा कि उनकी किसी आँख को तकलीफ़ पहुंची थी। फिर आँख ऐसी जड़ी, ठीक हुई है कि उनको एहसास ही नहीं होता था कि यह आँख वह थी जो निकली थी बल्कि यह आँख दूसरी आँख से ज़्यादा ख़ूबसूरत लगती थी।

(उद्धृत सिब्लुलहुदा और अलिशाद, भाग 4 पृष्ठ 53 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

कुछ कुतुब में आँख की शिफ़ा का यह वाक़िया जंग-ए-अहद का वर्णन किया गया है। कुछ कहते हैं कि यह जंग-ए-ख़ंदक़ का वाक़िया है। (ओसोदुल गाबा, भाग 4, पृष्ठ 371 कतादा बिन नोमानी अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2016 ई.) लेकिन बहर हाल यह मोजिज़ा था जो बदर के ज़िमन में भी वर्णन हुआ है।

मक्का में काफ़िरों की शिकस्त की ख़बर किस तरह पहुंची, उसका वर्णन इस तरह मिलता है कि मुशरेकीन ने मैदान-ए-बदर से ग़ैर मुनज़्ज़म शक्ल में भागते हुए तित्र बित्तर हो कर घबराहट के आलम में मक्के का रुख किया। शर्म-ओ--नदामत के सबब उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि किस तरह मक्के में दाख़िल हों।

सबसे पहले जो व्यक्ति मक्के में क़ुरैश की शिकस्त की ख़बर लेकर दाख़िल हुआ वह हैसमान बिन अयास बिन अब्दुल्लाह था। यह बाद में मुस्लमान हो गया था। लोगों ने उस से पूछा कि पीछे क्या ख़बर है? उसने कहा उत्बा बिन रबीया, शीबा बिन रबीया, अबु-अल-हुकम बिन हशशाम अर्थात अबुजहल और अमय बिन ख़लफ़ और मज़ीद कुछ सरदारों के नाम लिए यह क़तल हो गए हैं। जब उसने मक़्तूलीन में से क़ुरैश के सरदारों को गिनाना शुरू किया तो लोगों को उसकी बात का यक़ीन नहीं आया। सफ़वान बिन अमय जो हतीम में बैठा था उसने यह सुन कर कहा कि समझ नहीं आता शायद यह व्यक्ति दीवाना हो गया है। बतौर इमतेहान उस से दरयाफ़्त तो करो कि सफ़वान बिन अमय कहाँ है। अपने बारे में उसने पूछा। लोगों ने पूछा सफ़वान बिन अमय का क्या हुआ? उसने कहा वह देखो वह तो हतीम में बैठा है। मैं पागल नहीं हुआ मैं सब कुछ देख रहा बख़ुदा! इसके बाप और भाई को क़तल होते हुए मैंने अपनी आँखों से देखा है। अर्थात उस पर उन्हें यक़ीन हुआ कि यह व्यक्ति सच्ची ख़बर दे रहा है। उद्देश्य इस तरह अहल मक्का को मैदान-ए-बदर की शिकस्त-ए-फ़ाश की ख़बर मिली और उनकी तबीयत पर इस क़दर निहायत बुरा असर पड़ा है कि उन्होंने मक़्तूलीन पर नोहा करने की मुमानअत कर दी थी ताकि मुस्लमानों को उनके ग़म पर ख़ुश होने का अवसर न मिले

(المکتبہ السلفیہ ,الرحیق المختوم, पृष्ठ 307-308)(उसोदुल गाबा, भाग 2, पृष्ठ 102 प्रकाशन आदारुल कुतुब बेरूत2003 ई.)

क़ुरैश-ए-मक्का में से कुछ ने अपने मक़्तूलीन पर नोहा किया तो उन्होंने कहा ऐसा न करो अर्थात दूसरों ने उनको कहा क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साहबी रज़ियल्लाहु अन्हो को यह ख़बर पहुँचेगी तो वह तुम्हारी इस हालत पर ख़ुश होंगे और अपने क़ैदियों की रिहाई के लिए किसी को न भेजो यहां तक कि तुम उनके बारे में ख़ूब ग़ौर-ओ-फ़िक्र कर लो। न नोहा करना है, न अपने क़ैदियों को छुड़ाने के लिए कोई कोशिश करनी है ताकि मु-हम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साहबी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़िद्या के मुआमले में तुम पर सख़्ती न करें।

(सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 441 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

अहल-ए-मदीना को फ़तह की ख़ुशख़बरी किस तरह मिली और इस का रद्देअमल क्या था? इसके बारे में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो को अवाली मदीना अर्थात बालाई मदीना की तरफ़ और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो को नशीबी मदीना की तरफ़ इस बात की ख़ुशख़बरी देने के लिए भेजा जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाई थी।

(السیرۃ النبویہ لابن ہشام, पृष्ठ 437-438 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत

2001 ई.)

हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं हमें ये ख़बर उस वक़्त पहुंची जब हमने हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी हज़रत रुक़य्यह बिंत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर दी थी। वह पीछे वफ़ात पा गई थीं। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़बरगीरी के लिए पीछे छोड़ गए थे। मैं अपने वालिद हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरफ़ उस वक़्त आया जब लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को घेरे हुए थे। वह कह रहे थे उत्बा बिन रबीया, शीबा बिन रबीया, अबुजहल बिन हशशाम, ज़ामा बिन अस्वद, अबुल बखत्री, आस बिन हशशाम, अमय बिन ख़लफ़ और हुज्जाज के दोनों बेटे नुबेह और मुनब्बह को मौत के घाट उतार दिया गया है।

(अल्सीरतुल नब्विया ले इब्ने हशशाम, पृष्ठ 438 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

जबकि मदीना में यह सूरत-ए-हाल थी कि मुनाफ़ेक़ीन और यहूद ने अफ़्वाहों का बाज़ार गर्म कर रखा था कि मुस्लमानों को बुरी तरह शिकस्त हो चुकी है और यह कि न'ऊज़ु-बिल्लाह (हम अल्लाह से पनाह माँगते हैं) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी क़तल हो चुके हैं। इन्ही अफ़्वाहों के अंधेरों में हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनी पर जब मदीना में दाख़िल हुए तो यहूद और मुनाफ़ेक़ीन ने और बढ़ बढ़कर कहना शुरू कर दिया कि देखा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़तल हो चुके हैं और ऊंटनी पर ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो आ रहे हैं। और जब हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह बताना शुरू किया कि उत्बा भी मारा गया, शीबा भी मारा गया, अबुजहल भी मारा गया, उमय्या भी मारा गया तो इस पर मुनाफ़ेक़ीन ने कहना शुरू कर दिया कि भला ये कैसे मुम्किन है। लगता है कि मुस्लमानों की शिकस्त और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की वजह से ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो अपने होश-ओ-हवास खो चुके इसलिए ये इस तरह की बातें कर रहे हैं। जो कुफ़्फ़ार का रद्देअमल मक्के में था वही रद्देअमल मुनाफ़ेक़ीन और यहूद का मदीने में भी हुआ। हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि क्योंकि मैं ये सारी बातें मदीने में सुन रहा था इसलिए मैं अपने वालिद ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो को एक तरफ़ लेकर गया और पूछा कि अब्बा जो तुम कह रहे हो क्या वाक़ई सच्च है? तो कहने लगे कि बेटा ख़ुदा की कसम ऐसा ही हुआ है और जो मैं कह रहा हूँ वह सच्च है। अहले मदीना यह इत्तिला मिलते ही फ़तहयाब नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क़ाफ़िले को ख़िराज-ए-अक़ीदत पेश करने के लिए उमड आए, इकट्ठे हो गए। मुस्लमान इस फ़तह पर प्रसन्न और ख़ुश थे। उन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वापसी का शिद्दत से इंतेज़ार था। इस ग़ज़वे में समस्त मुस्लमान शामिल नहीं हुए थे क्योंकि मदीने से रवाना होते हुए जंग का ख़्याल ही न था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद का सुनकर कुछ मुस्लमान इस्तक़बाल के लिए मदीना से बाहर चले गए। मुक़ाम रूहा पर उनकी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात हुई। उनकी ख़ुशी काबिल-ए-दीद थी। यह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुफ़्फ़ार पर फ़तह की मुबारकबाद देने लगे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए वहां मौजूद समस्त मुस्लमानों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस्तक़बाल किया।

(उद्धृत दायरा मारुफ-ए-सीरत-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 233-234 बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर, अप्रैल 2022 ई.)

इस जंग में अम्वाल-ए-ग़नीमत के बारे में जो वर्णन है वह इस तरह है कि इस फ़तह से मुस्लमानों को माल-ए-ग़नीमत में से एक सौ पच्चास ऊंट और दस घोड़े मिले। इसके इलावा हर किस्म का सामान, हथियार, कपड़े और बेशुमार खालें, रंगा हुआ चमड़ा और ऊन इत्यादि था जो मुशरिक अपने साथ तिजारत के लिए लेकर आए थे।

(अल् सीरतुल हल्बिया, भाग 2, पृष्ठ 252 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना हिस्सा भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के हिस्से के बराबर रखा था। इस जंग में एक तलवार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए रख ली और ऊंटों में से एक ऊंट अबुजहल की मिल्कियत में से आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिला था जिसकी नाक में चांदी का हलक़ा था। (ग़ज़वातुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अज़ मौलाना अबुल कलाम पृष्ठ 43-44 सिटी बुक प्वाईंट कराची 2014 ई.)

इस तलवार और ऊंट को भी कुतुब-ए-सीरत में ख़ास एहमियत दी गई है जिसकी तफ़सील यह है कि जिस तलवार का ऊपर वर्णन हुआ है उस का नाम ज़ुल्फ़क़ार था और उस का मालिक एक मुशरिक आस बिन मुनबीहा मुनब्बे बिन हज्जाज था जो बदर में मारा गया था। कुछ रवायात के मुताबिक़ यह तलवार अबुजहल की थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस तलवार का नाम ज़ुल्फ़क़ार ही कायम रखा। ज़ुल्फ़क़ार की वजह तसमीया में कहा गया है कि इस तलवार में दंदाने या ख़ुदी हुई लकीरें थीं।

(तबक़ातुल कुब्रा लेइब्ने साद, भाग 1 पृष्ठ 377 **ذکر سیوف رسول اللہ** सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(उर्दू दायरा मआरूफ़ इस्लामिया, भाग 10, पृष्ठ 46 पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर)

(अलसीरतुल हल्बिया, भाग 2, पृष्ठ 254 दारुल कुतुब बेरूत 2002 ई.)

इस तलवार के बारे में लिखा है कि यह तलवार बाद में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जुदा नहीं हुई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वात में इस तलवार को अपने पास रखा। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद यह तलवार अब्बासी खलीफ़ा के पास रही। (शरह अल्ज़रक़ानी, भाग 5 पृष्ठ 85 से 87 दारुल कुतुब बेरूत)

इसी तरह अबुजहल का जो ऊंट नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़ज़व-ए-बदर में बतौर माल-ए-ग़नीमत मिला था वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास रहा यहां तक कि सुलह हुदैबिया के मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे क़ुर्बानी के तौर पर लेकर गए। इसके बारे में एक क़िस्सा भी मिलता है कि यह ऊंट हुदैबिया में चर रहा था कि वह भाग निकला यहां तक कि मक्का अबुजहल के घर जा पहुंचा। हज़रत अम्र बिन अनामह अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो उस के पीछे निकले ताहम मक्का के कुछ तेज़ तबीयत वालों ने उसे वापस करने से इंकार कर दिया। सुहेल बिन अम्र जो मुआहिदा हुदैबिया के वक़्त क़ुरैश का नुमाइंदा था उसने उन लोगों को वह ऊंट वापस करने का हुक्म दिया तो वापस किया गया। उसने उन लोगों से यह कहा कि तुम इसके बदले में सौ ऊंट देने की पेशकश कर दो। अगर मुस्लमान उसको क़बूल कर लें तो यह ऊंट रोक लेना अन्यथा ऊंट वापस करना होगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर हमने उसको क़ुर्बानी के जानवरों में शुमार न किया होता तो हम उसको वापस कर देते लेकिन यह पहले से क़ुर्बानी के लिए मुख़तस हो चुका है इसलिए अब नहीं। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों की जानिब से उसे ज़बह कर दिया।

(सब्लुल हुदा, भाग 5 पृष्ठ 57 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993) (सब्लुल हुदा अनुवादक, भाग 5 प्रष्ठ 82-83 प्रकाशन ज़ावीया पब्लिशरज़ लाहौर)(ग़ज़वातुन्नबी अज़ा इज़ाला हल्बी, अनुवाद उर्दू, पृष्ठ 429 दारुल इशाअत कराची)

अम्वाल-ए-ग़नीमत की तक़सीम में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग-ए-बदर में शहीद होने वालों के विरसा को इन शुहदा का हिस्सा दिया और इसी तरह जो नायबीन मदीना में निर्धारित फ़रमाए या कुछ साहबी रज़ियल्लाहु अन्हो जिनके सपुर्द मुख़्तलिफ़ डयूटियाँ लगाई गई थीं और वह इस वजह से जंग-ए-बदर में शामिल न हो सके थे उनको भी हिस्सा दिया गया।

(ग़ज़वातुन्नबी अज़अलामा हल्बी, अनुवाद उर्दू, पृष्ठ 143-144 दारुल इशाअत कराची)

जंग-ए-बदर के क़ैदियों से फ़िद्या और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की आरा के बारे में लिखा है कि जंग-ए-बदर के इन क़ैदियों को फ़िद्या लेकर रिहा कर दिया गया। फ़िद्या की रक़म चार हज़ार से एक हज़ार दिरहम तक थी जबकि जो फ़िद्या की रक़म नहीं दे सकते थे उन के लिए यह शर्त रखी थी कि वह मदीना के बच्चों को लिखना पढ़ना सिखा दें तो रिहा हो जाऐंगे। इसी तरह कुछ क़ैदियों को कम फ़िद्या या बग़ैर फ़िदिया के भी छोड़ा दिया गया।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमअज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 368-369)

फ़िद्या की जो रिवायात हैं वह मुख़्तलिफ़ किस्म की रिवायतें हैं और कुछ अजीब तरह के इबहाम पैदा करती हैं। इस बारे में सही हल भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने निकाला है। बहरहाल पहले सारी बात वर्णन कर देता हूँ। तारीख़-ओ-सीरत यहां तक कि कुतुब हदीस में जंग-ए-बदर के क़ैदियों से फ़िद्या लेने के बारे में जो रिवायात मौजूद हैं उनमें रिवायात का ख़लत-मलत हो गया है

हक़ीक़त यही है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़िद्या लेने का जो फ़ैसला फ़रमाया था वह इलाही मंशा के ऐन मुताबिक़ था। उमूमी रिवायात के मुताबिक़ गो मैं पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़िमन में वर्णन कर चुका हूँ यहां भी उसे वर्णन करना ज़रूरी है इसलिए वर्णन करता हूँ। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब उन्होंने क़ैदियों को पकड़ा अर्थात बदर के मौक़े पर मुस्लमानों ने क़ैदियों को पकड़ा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि इन क़ैदियों के बारे में तुम्हारी क्या राय है? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वह हमारे चचाज़ाद और रिश्तेदार हैं।

मेरा ख़्याल है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन से फ़िद्या ले लें। वह हमारे लिए इन कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में क़ुव्वत का बायस होगा और क़रीब है कि अल्लाह तआला उनको इस्लाम की तरफ़ राहनुमाई फ़रमाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे इब्ने ख़त्ताब तुम्हारी क्या राय है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा नहीं हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह की क़सम मेरी वह राय नहीं है जो अबूबकर की राय है। बल्कि मेरी राय यह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हे हमारे सपुर्द कर दें। हम उनकी गर्दनें मार दें। उनको क़तल कर दें। और अली के सपुर्द अक़ील को करें कि वह उसकी गर्दन मारे और मेरे सपुर्द अमुक को करें जो नसबन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का रिश्तेदार था तो मैं उसकी गर्दन मार दूं क्योंकि ये सब कुफ़्फ़ार के लीडर और उनके सरदार हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बात को तर्जीह दी और मेरी बात को तर्जीह नहीं दी। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि अगले दिन मैं आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अबूबकर बैठे रो रहे थे। मैंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मुझे बताएं किस चीज़ ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी को रुलाया है। अगर मुझे रोना आया तो मैं भी रोऊँगा अन्यथा मैं आप दोनों के रोने की तरह रोनी सूरत बना लूँगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरे रोने की वजह यह है जो तुम्हारे साथियों ने मेरे सामने उनसे फ़िद्या लेने की तजवीज़ पेश की थी। मेरे सामने उनका अज़ाब उस दरख़्त से ज़्यादा क़रीब पेश किया गया है जो दरख़्त अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब ही था और अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई है कि مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ (अल् अनफ़ाल : 68) अर्थात किसी नबी के लिए जायज़ नहीं कि ज़मीन में ख़ूँरेज़ जंग के बग़ैर क़ैदी बनाए और फिर अगली दो आयतें छोड़ के है कि فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا (अल् अन्फ़ाल : 70) अर्थात अतः जो माल-ए-ग़नीमत तुम हासिल करो इस में से हलाल और पाकीज़ा खाओ। अतः अल्लाह ने उन के लिए ग़नीमतें जायज़ कर दी हैं। यह सही मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम, किताबुल् जिहाद और सैर, الْاِمْدَادِ بِالْمَلَائِكَةِ فِى غزوة بدر, ग़ज़व बदर, واباحة الغنائم हदीस : 4588)

इस हदीस के शुरू के जो शब्द हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रो रहे थे और फिर आगे जो क़ुरआन की आयात के शब्द हैं उनमें जो मज़मून वर्णन हुआ है वह इस रिवायत को मुबहम सा कर देता है, पता नहीं लगता क्या कहा जा रहा है। बात वाज़िह नहीं होती। बहरहाल इस रिवायत को सही समझ के अक्सर कुतुब-ए-तारीख़ और सीरत और मुफ़स्सेरीन ने वर्णन किया है कि अल्लाह तआला ने गोया जंग-ए--बदर के क़ैदियों से फ़िद्या लेने वाले फ़ैसले पर नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय को पसंद फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की सीरत-ओ-सवानेह लिखने वाले जब एक अलग बाब बाँधते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय पर कौन कौन से क़ुरआन के अहकाम नाज़िल हुए तो उनमें से एक यह भी दर्ज किया जाता है कि जंग--ए-बदर के क़ैदियों के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय को अल्लाह तआला ने तर्जीह दी लेकिन यह मुबहम सी बात है। इस की कोई समझ नहीं आती। लगता है कि सीरत निगारों और मुफ़स्सेरीन को उसको समझने में ग़लती लगी है। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसकी वज़ाहत में जो वर्णन फ़रमाया है वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ैर प्रकाशित तफ़सीरी नोट में मिला है जो उसकी वज़ाहत करता है और उन रिवायात की तरदीद करता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की जो यह वज़ाहत है वही सही लगती है। बिलावजह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के मुक़ाम को ऊंचा करने के लिए लगता है कि कुछ मुफ़स्सेरीन ने यह रिवायत बना दी है या उसको ग़लत समझा गया है। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत अन्फ़ाल की नंबर 68 की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि इस्लाम से पहले अरब में रिवाज था और लिखते हैं कि अफ़सोस है कि दुनिया के कुछ हिस्सों में अब तक यह रिवाज चला आ रहा है कि अगर जंग न भी हो और लड़ाई न भी हो तब भी क़ैदी पकड़ लेते हैं और उनको ग़ुलाम बना लेते हैं। यह उस ज़माने की बात है जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्होने यह नोट लिखा था। यह आयत इस क़बीह रस्म को मंसूख़ करती है और साफ़ साफ़ अलफ़ाज़ में हुक्म देती है कि सिर्फ जंग की हालत में और लड़ाई के बाद ही दुश्मन के आदमी क़ैदी बनाए जा सकते हैं। अगर लड़ाई न हो रही हो तो किसी आदमी को क़ैदी बनाना जायज़ नहीं। इस आयत की बड़ी ग़लत तफ़सीर की गई है। कहते हैं कि जब मुस्लमानों ने जंग-ए-बदर के अवसर पर मक्का वालों के कुछ क़ैदी पकड़ लिए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से मश्वरा किया कि उनके मुताल्लिक़ क्या फ़ैसला करना चाहिए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय थी कि उनको क़तल कर देना चाहिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय थी कि फ़िद्या लेकर छोड़ देना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय को पसंद फ़रमाया और यह सूरः अन्फ़ाल की 68 आयत है जिस में यह है कि किसी नबी के लिए जायज़ नहीं कि ज़मीन में ख़ूँरेज़ जंग करे। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्होउसी की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं कि जो राय ली गई थी इस में तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय मुख़्तलिफ़ थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय मुख़्तलिफ़ थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय को पसंद फ़रमाया और फ़िद्या लेकर क़ैदियों को छोड़ दिया लेकिन मुफ़स्सेरीन कहते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो गोया ख़ुदा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ेअल को नापसंद फ़रमाया। केवल हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की बात को एहमियत देने के लिए यह रिवायत बना दी गई है और चाहे इस से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुक़ाम कम होता हो। बहरहाल यह कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ेअल को अल्लाह तआला ने नापसंद फ़रमाया। क़ैदियों को क़तल कर देना चाहिए था और फ़िद्या नहीं लेना चाहिए था। ये तिबरी की तफ़सीर में है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि यह तफ़सीर ग़लत है। अव्वल उस वक़्त तक ख़ुदा ने कोई ऐसा हुक्म नाज़िल नहीं किया था कि क़ैदियों को फ़िद्या लेकर न छोड़ा जाए इसलिए फ़िद्या क़बूल करने पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कोई इल्ज़ाम नहीं आ सकता था। दूसरे इस से पेशतर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नख़ला के मुक़ाम पर दो आदमियों से फ़िद्या लेकर उनको छोड़ दिया था और ख़ुदा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस फ़ेअल को नापसंद नहीं फ़रमाया था। तृतीय केवल दो आयतें और आगे चल कर ख़ुदा मुस्लमानों को इजाज़त देता है कि माल-ए-ग़नीमत से जो कुछ तुमको मिले उस को खाओ वह हलाल और तुय्यब है। यह बात किसी के वहम में भी नहीं आ सकती कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़िद्या लेने को ख़ुदा नापसंद करे और इस तरह जो रुपया हासिल हो उस को हलाल और तुय्यब फ़रमाए। इसलिए यह तफ़सीर ही ग़लत है और सही तफ़सीर यही है कि इस आयत में एक उसूल निर्धारित फ़र्मा दिया है कि क़ैदी उसी सूरत में पकड़े जा सकते हैं कि बाक़ायदा जंग हो और दुश्मन को कारी ज़रबें लगा कर मग़लूब कर दिया गया हो।

(उद्धृत दरूस हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो(ग़ैर मतबूआ सूरत अन्फ़ाल, रजिस्टर नंबर 36 पृष्ठ 968-969)

इस का हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की इस बात से कोई ताल्लुक़ नहीं कि फ़िद्या न लिया जाए। मुफ़स्सेरीन क़ुरआन में से अल्लामा इमाम राज़ी और मारूफ़ सीरत निगार अल्लामा शिबली नुमानी का भी यही मौक़िफ़ है जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन फ़रमाया है।

(तफ़सीर-ए-कबीर अल्लामा इमाम राज़ी, भाग 8 भाग 15 पृष्ठ 158 प्रकाशन दारुल कुतुब बेरूत 2004 ई.) (सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अज़ शिबली नुमानी, भाग प्रथम, पृष्ठ 194 प्रकाशन आर, जैड पैकेजज़ लाहौर 1408)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस बारे में लिखा है कि "मदीना पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ैदियों के मुताल्लिक़ मश्वरा किया कि उनके मुताल्लिक़ क्या करना चाहीए। अरब में बिल् उमूम क़ैदियों को क़तल कर देने या मुस्तक़िल तौर पर ग़ुलाम बना लेने का दस्तूर था। परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तबीयत पर यह बात सख़्त नागवार गुज़रती थी। और फिर अभी तक इस बारे में कोई इलाही अहकाम भी नाज़िल नहीं हुए थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि मेरी राय में तो उनको फ़िद्या लेकर छोड़ देना चाहिए क्योंकि आख़िर ये लोग अपने ही भाई बन्दु हैं और क्या ताज्जुब कि कल को इन्ही में से फ़िदायान-ए-इस्लाम पैदा हो जाएं परंतु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस राय की मुख़ालेफ़त की और कहा कि देन के मुआमला में रिश्तेदारी का कोई पास नहीं होना चाहिए और ये लोग अपने अफ़आल से क़तल के मुस्तहिक़ हो चुके हैं। अतः मेरी राय में इन सबको क़तल कर देना चाहिए बल्कि हुक्म दिया जाए कि मुस्लमान ख़ुद अपने हाथ से अपने अपने रिश्तेदारों कोक़त्ल करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने फ़ित्री रहम से मुतास्सिर हो कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय को पसंद फ़रमाया और क़तल के ख़िलाफ़ फ़ैसला किया और हुक्म दिया कि जो मुशरेकीन अपना फ़िद्या इत्यादि अदा कर दें उन्हें छोड़ दिया जाए। इसलिए बाद में इसी के मुताबिक़ इलाही

हुक्म हुआ।" अलिफ जब इलाही हुक्म भी फ़िद्या देने के बारे में नाज़िल हो गया जैसा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी लिखा है तो फिर हदीस को बुनियाद बना कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो के रोने का जवाज़ पैदा करना अजीब सी बात लगती है। बहरहाल हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो लखते हैं कि "इसलिए हर व्यक्ति के मुनासिब-ए-हाल एक हज़ार दिरहम से लेकर चार हज़ार दिरहम तक उसका फ़िद्या निर्धारित कर दिया गया। इस तरह सारे क़ैदी रिहा होते गए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 367-368)

बाक़ी इन शा अल्लाह आगे

जुमे के बाद मैं दो जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला राना अब्दुल हमीद ख़ान साहब काठगढ़ी का है। मुरब्बी सिलसिला थे और पाकिस्तान में नायब नाज़िम माल-ए-वक़्फ़ जदीद थे। पिछले दिनों सत्तर साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके वालिद का नाम चौधरी अब्दुल लतीफ़ ख़ान साहब काठगढ़ी था और माता अमतुल लतीफ़ साहिबा थीं। उनके वालिद भी वाकिफ-ए-ज़िंदगी थे। जमाअत के कारकुन थे। अब्दुल हमीद ख़ान साहब काठगढ़ी के ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके दादा हज़रत चौधरी अब्दुल मनान ख़ान साहब काठगढ़ी और दादा के बड़े भाई हज़रत चौधरी अब्दुल सलाम ख़ान साहब काठगढ़ी के द्वारा हुआ जिन्हों ने दिसंबर 1903 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की सआदत हासिल की थी। अब्दुल हमीद ख़ान साहब काठगढ़ी ने मई 1979 ई. में बतौर मुरब्बी अपनी ख़िदमात का आग़ाज़ किया और मुख़्तलिफ़ जगहों पर उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। पाकिस्तान में भी और बैरून-ए-मुल्क भी। वकालत तिबशीर् के तहत अगस्त 85 ई. से दिसंबर 86 ई. तक योगंडा में रहे। फिर निज़ामत इरशाद वक़्फ़-ए--जदीद के तहत मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर बतौर मुरब्बी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फिर 1993 ई. में नायब नाज़िम माल वक़्फ़ जदीद निर्धारित हुए जहां आप ता वफ़ात ख़िदमात बजा लाते रहे। चवालीस (44) साल तक सिलसिले की ख़िदमत की उन्होंने तौफ़ीक़ पाई। आपको अल्लाह तआला ने एक बेटे और एक बेटी से नवाज़ा। उनके बेटे डाक्टर अब्दुल रौफ़ ख़ान साहब आजकल सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया हैं ।

डाक्टर रऊफ़ ख़ान कहते हैं कि वालिद साहिब ने हमेशा वक़्फ़ के साथ वफ़ा की। योगांडा में जब थे तो वहां से जल्दी आने की वजह यह बनी कि वहां बागियों ने हुकूमत का तख़्ता उलट दिया था और ग़ैर मुल्कियों को निकाला था। बहरहाल योगंडा में ख़िदमात के दौरान कहते हैं कि वालिद साहिब को वहां के मिशनरी इंचार्ज महमूद बी-टी साहिब ने क़ुरआन-ए-करीम देकर कम्पाला में बग़रज़-ए-तब्लीग़ भेजा। इस दौरान वहां इस इलाक़े में सिवल वार शुरू हो गई। लोग नक़्ल-ए-मकानी करने पर मजबूर हो गए। कहते हैं इस नक़्ल-ए--मकानी के दौरान वालिद साहिब बीमार हो गए और हस्पताल क़रीब न होने और तिब्बी इमदाद उपलब्ध न होने की वजह से लोग उनके पिता को वहीं एक कमरे में छोड़कर चले गए। इस इलाक़े पर बागियों ने क़बज़ा कर लिया। बागियों ने वहां हरतरफ़ सर्चिंग की कि कोई व्यक्ति यहां मौजूद तो नहीं। इस दौरान एक बाग़ी उनके कमरे तक भी आया जहां कहते हैं कि हमीद साहिब मौजूद थे लेकिन लेटे हुए थे और वालिद साहिब को मुर्दा समझ कर उन्होंने छोड़ दिया। कहते हैं मेरे वालिद साहिब बताते थे कि मैं खिड़की के बिल्कुल साथ नीचे लेटा हुआ था और खिड़की से गोलीयां आती थीं और सामने वाली दीवार पर जा लगती थीं। इसके बाद कुछ थोड़े से हालात बेहतर हुए तो चंद जानने वाले लोगों से राबिता हुआ तो उन्होंने वालिद साहिब को महफ़ूज़ मुक़ाम पर मुंतक़िल किया और इस तरह अल्लाह तआला ने उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाई।

ख़िलाफ़त से भी उनका बेहद अक़ीदत और मुहब्बत का और प्यार का ताल्लुक़ था। बड़े सादा और मिलनसार इन्सान थे। ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ुतबात में जो भी कहा जाता आप उनकी हर बात पर लब्बैक कहने वाले थे। किसी तावील के क़ाय्ल नहीं थे और जो कोई तावील करता था कि यह मतलब है या यह मंशा है तो बड़े नाराज़ हुआ करते थे। फिर ओहदेदारान और मुरब्बियान का ख़ुद भी अदब करते थे और उनके बेटे कहते हैं मुझे भी इसकी तलक़ीन किया करते थे। कहते हैं जब मैं इत्फ़ालुल अहमदिया की तंज़ीम में था तो एक मर्तबा कहने लगे कि अगर तुमने ओहदेदार और मुंतज़िम इत्फ़ाल की बात नहीं माननी, किसी बात पर उन्होंने इख़तेलाफ़ क्या होगा तो ओहदा छोड़ दो और कहते थे कि निज़ाम जमाअत और ख़िलाफ़त एक साथ जड़े हुए हैं। यह नहीं कि एक की बात मानो और एक की न मानो। दूसरों की मदद करना और बर्मो का इस्लाह करना आपका ख़ास वस्फ़ था यहां तक कि अगर आप किसी चीज़ की इस्लाह करते और कोई नाराज़ हो जाता तो उसकी कोई पर्वा नहीं करते थे। और अगर इस्लाह हो जाती तो इसके बाद उसकी हौसला अफ़ज़ाई करते और कहते कि मेरा उद्देश्य केवल इस्लाह करना था। लिखते हैं कि बहुत से ऐसे अवसर आए कि ज़िंदगी में आसायश हो सकती थी लेकिन आपने हमेशा वक़्फ़ को तर्जीह दी। आख़िरी आयु में कहते हैं कि मैंने भी वालिद साहिब को बातों बातों में कहा कि डेनमार्क मेरे पास आ जाऐं तो बहुत नाराज़ हुए और उन्होंने कहा कि मैंने साल वक़्फ़ नहीं किए ज़िंदगी वक़्फ़ की है और मेरा सब कुछ वक़्फ़ के साथ ही है।

उनकी बेटी हाफ़िज़ा हुस्न-आरा कहती हैं कि मेरे वालिद बेहद मेहरबान, शफ़ीक़, मेहमान नवाज़ और ख़ुदातरस थे। दुआओं का एक ख़ज़ाना थे। एक ख़ास नुमायां वस्फ़ ख़ुदा तआला की ज़ात पर कामिल यक़ीन और भरोसा था और इसके बाद ख़िलाफ़त से मुहब्बत नुमायां वस्फ़ था। ख़िलाफ़त से हर एक रिश्ते से बढ़कर एक ख़ास मुहब्बत का अंदाज़ था। हरवक़त सोच का महवर और बात का आग़ाज़ और इख़ततामे सिर्फ और सिर्फ ख़िलाफ़त और ख़लीफ़ा वक़्त से मुहब्बत की तलक़ीन करते रहना था। कहती हैं यहां यू.के में भी कभी आते थे तो जब मैं कई दफ़ा जज़बात से मग़लूब हो के अपना इज़हार करती तो कहा करते थे कि दुनिया के तमाम रिश्ते फ़ानी हैं। तुम सिर्फ़ ख़ुदा से अपना रिश्ता मज़बूत रखो। बाक़ी सब रिश्ते छोड़ जाते हैं क्योंकि क़ायम रहने वाली ज़ात सिर्फ़ ख़ुदा तआला की ज़ात है जो कभी अकेला नहीं छोड़ता और फिर उसके बाद कहा कि ख़िलाफ़त से अपना ताल्लुक़ मज़बूत रखो। इंतेहाई सादा तबीयत के इन्सान थे। हर वक़त यही कहा करते थे कि में एक वाकिफ-ए-ज़िं-दगी हूँ। मेरी सारी ज़िंदगी वक़्फ़ है और इस ख़ाहिश का इज़हार किया कि आख़िर वक़्त तक निभाऊं।

हाफ़िज़ ख़ालिद इफ़्तिख़ार साहिब नाज़िम माल वक़्फ़ जदीद लिखते हैं कि अब्दुल हमीद ख़ान साहब के साथ तक़रीबन बीस साल काम करने का अवसर मिला और हमेशा उनका किरदार एक हक़ीक़ी वाक़िफ़ ज़िंदगी का रहा है। उमर और तजुर्बे के लिहाज़ से कहते हैं मुझ से बड़े थे लेकिन इताअत-ए-ख़िलाफ़त और निज़ाम जमाअत के इंतेहा दर्जा के पाबंद होने के बायस कभी भी अपनी सिनयार्टी (Seniority) का एहसास नहीं होने दिया। उनके नायब थे। कहते हैं बेलौस और बेनफ़्स हो कर ख़ाकसार के साथ उन्होंने काम किया। समझाने और चंदे की तहरीक करने का अंदाज़ बहुत उम्दा था। नए आने वाले कारकु-नान और मुरबबियान और मोअल्लेमीन को हिक्मत के साथ काम करने का अंदाज़ समझाया करते थे। अपने मफ़ोवज़ा फ़रायज़ मुकम्मल इताअत के साथ अदा करते। सायबुल राए थे। ख़िदमत का रंग गो कि ख़ामोश था और बेनफ़्स था लेकिन तीस साल से ज़ायद अरसा वक़्फ़ जदीद ने उनसे बहुत फ़ायदा हासिल किया। आख़िरी चंद सालों में बाज़-औक़ात सेहत ख़राब हो जाती, बच्चे बैरून--ए-मुल्क थे अगर कभी-कभार किसी ने इज़हार कर दिया कि किसी बच्चे के पास चले जाएं तो बहुत जज़बाती हो कर जवाब देते थे कि मैंने ज़िंदगी वक़्फ़ की है और आख़िरी वक़्त तक ख़िदमत करूँगा। अल्लाह तआला ने उन्हें तौफ़ीक़ भी दी कि इस अहद को उन्होंने आख़िर वक़्त तक निभाया।

निज़ामत-ए-माल में मुबश्शिर अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं कहते हैं कि 2013 ई. में वक़्फ़-ए-जदीद में माल के शोबे में मेरा तक़र्रुर हुआ। अब्दुल हमीद ख़ान साहब ने बुनियादी दो नसाएह कीं कि इन दोनों को अपनी कापी में नोट कर लो। पहली यह कि तमाम बरकतों का मंबा ख़िलाफ़त है। हर सूरत-ए-

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 07 SEPTEMBER 2023 Issue No. 36

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

-हर हालत में ख़िलाफ़त से वफ़ा करनी है। दूसरी यह कि काम में सुस्ती अगर हो जाए तो वह तो सिर्फ-ए-नज़र हो जाती है परंतु ग़लत बयानी और झूठ की कोई माफ़ी नहीं होती। कभी ग़लत बयानी नहीं करनी और झूठ नहीं बोलना। कहा ये दो उसूल पल्ले बांध लो। और यह तो ख़ास है ही है। हमारा हर एक का उस पर ईमान और यक़ीन कि अल्लाह तआला से हमेशा मदद मांगते रहना और दुआ करते रहना। बहरहाल कहते हैं कि दौराजात के दौरान में उनके साथ रहा। बार-बार यही ताकीद करते कि तहरीक करते हुए इस फ़र्द को वक़्फ़ जदीद की एहमीयत और ज़रूरत से इस क़दर आगाह करना चाहिए कि उसे क़ुर्बानी करने में कोई इन्केबाज़ न रहे। सिर्फ पैसे नहीं मांगने बल्कि चंदे की एहमियत उसके दिल में डालनी है। जमाअत का दर्द इस में पैदा करना है और फिर इस से इस की हैसियत के मुताबिक़ माँगना है और फिर कोई शर्म महसूस करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हमारा काम सिलसिले की ख़िदमत करना और सिलसिले के लिए मदद लेना है। जमाअती अमलाक का ख़्याल रखते। ताकीद करते कि चंद अहबाब-ए-जमात की क़ुर्बानियों के नतीजे में इकट्ठे होते हैं उनको चंदों को ख़र्च करने में, अख़राजात करने में हमें इसराफ़ से काम नहीं लेना चाहिए। जो ज़रूरत है वह ज़रूर लें परंतु ज़रूरत से ज़ायद ख़र्च न करें। कहते थे मैंने अपने बेटे को भी कहा हुआ है कि जब तक तुम जमाअत के वफ़ादार हो तुम मेरे बेटे हो। बाक़ी मेरा तुमसे कोई ताल्लुक़ या मुतालिबा नहीं है। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी नेकियां भी उनकी औलाद में जारी रखे

अगला जो वर्णन है और जो जनाज़ा होगा वह नुसरत जहां अहमद साहिबा पत्नी माननीय मुबश्शिर अहमद साहिब का है जो अमरीका में मुरब्बी सिलसिला हैं। पिछले दिनों उनकी भी वफ़ात हुई है। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیۡہِ رَاجِعُوۡنَ. ।मरहूमा अपने ख़ावंद माननीय मुबश्शिर अहमद साहिब और तीन बच्चों के हमराह 1972 ई. में अमरीका मुंतक़िल हो गईं। वाशिंगटन में सुकूनत इख़्तेयार की। 1988 ई. में अमरीका में उनके ख़ावंद ने वक़्फ़-ए-ज़िंदगी करने की तौफ़ीक़ पाई और मरहूमा ने तमाम उम्र बहुत सादगी और शुक्रगुज़ारी के साथ बसर की। उनके पति मुबश्शिर साहिब ने जब वक़्फ़ किया है तो उस वक़्त से ये मुरब्बी के काम सरअंजाम दे रहे हैं। बहुत सादगी और शुक्रगुज़ारी के साथ उन्होंने उनके साथ ज़िंदगी गुज़ारी। मरहूमा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। बाक़ायदा चंदों में बढ़ चढ़ के हिस्सा लेने वाली, ख़िलाफ़त के साथ बहुत इशक़ का ताल्लुक़ था, 1977 ई. से 2007 ई. तक लज्ना ईमाइल्लाह में मुख़्तलिफ़ हैसियत से ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। लोकल नायब सदर, लोकल सदर, रीजनल सदर इत्यादि रहीं। इस्लाम अहमदियत के फैलाने के लिए बहुत मेहनत और लगन से तब्लीग़ी प्रोग्राम तर्तीब दिए। लज्ना और नासात की तालीम-ओ--तर्बीयत के लिए भी मुख़्तलिफ़ प्रोग्रामों का इनएक़ाद किया। अपने बच्चों की भी दीनी रंग में बेहतर तर्बीयत की। इसी तरह दुनियावी तालीम की तरफ़ भी तवज्जा दिलवाई। पीछे रहने वालों में मियां के इलावा दो बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। मरहूमा के चारों बच्चे अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत के सक्रिय मैंबर हैं। ख़िदमत-ए-दीन की तौफ़ीक़ भी पा रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी दुआओं और नेकियों का वारिस बनाए।

★ ★ ★

महत्वपूर्ण सूचना
नूर हस्पताल क़ादियान में ऐक्सरे (X-Ray) टेक्नीशियन की ज़रूरत है
शर्तें

(1) प्रत्याशी की आयु 37 वर्ष से अधिक न हो (2) प्रत्याशी ने किसी सरकारी या रजिस्टर्ड विभाग से एक्स-रे टेक्नीशन का कोर्स किया हो और ऐसे कोर्स को Paramedical Council of Punjab मानता हो (3) डॉक्टर का निर्देश पढ़ने के लिए अंग्रेज़ी अच्छी पढ़ना जानता हो (4) अनुभव रखने वाले को प्राथमिकता दी जाएगी (5) सप्ताहिक अख़बार बदर में प्रकाशित आख़िरी सूचना के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगे उन्हीं पर ग़ौर होगा (6) इच्छा रखने वाले प्रत्याशी अपने निवेदन प्रकाशित फ़ार्म पर अपने ज़िला अमीर स्थानीय अमीर/ सदर जमाअत/ मुबल्लिग़ इंचार्ज के हस्ताक्षर मोहर के साथ भिजवा सकते हैं (7) इंटरव्यू में सफ़लता की सूरत में उम्मीदवार को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकतस्क जांच करवानी होगी और सिर्फ वही उम्मीदवार ख़िदमत के योग्य होगा जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहत मंद और तंदरुस्त होगा (8) स्लैक्शन की सूरत में प्रत्याशी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आने जाने और मैडीकल के समस्त अख़राजात प्रत्याशी के अपने ज़िम्मा होंगे (10) मज़कूरा असामी के लिए कोइ फ़ार्म नज़ारत दीवान से हासिल कर सकते हैं (11) प्रत्याशी जब इंटरव्यू के लिए तशरीफ़ लाएंगे तो अपनी असल तालीमी प्रामाणिकताएं अपने साथ ज़रूर लाएंगे

नोट:-लिखित परीक्षा साक्षात्कार की तिथि से प्रत्याशी उनको बाद में अवगत किया जाएगा

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
पिन कोड143516-
मोबाइल:09646351280/09682587713
दफ़्तर 01872-501130
E-mail: diwan@qadian.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
اب دیکھئے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad